BAOU
Education for All

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी
कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम
(स्किल एन्हांसमेंट कोर्स)
HNDSEC-101
अनुवाद और उसकी प्रविधि

स्वाध्याय का उजास

भारतीय संविधान निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब आंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य की शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2025 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ODL) माध्यम से सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के 79, यू.जी.सी. मानदंडों के तहत पीएच.डी. स्तर के 16, ऑनलाइन माध्यम से 10 और स्वयं (SWAYAM) माध्यम से 07 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब आंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को उस मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा पूरा योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मैं स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन के मूल का यहाँ उल्लेख करना चाहूँगी :

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके."

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेंद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के बृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यलीन है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सकें.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **"स्वाध्यायः परमं तपः"** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इनफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. जल्द ही योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध होंगे, जो वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय
कुलपति
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी (BAHONSHND)

HNDSEC-101 : अनुवाद और उसकी प्रविधि

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) योगेंद्र पारेख	निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सह संपादक :

डॉ. आशीष कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. आलोक गुप्त	(सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.
डॉ. ओम प्रकाश शुक्ल	एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, गुजरात कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, अहमदाबाद.
डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इकाई लेखक :

डॉ. पार्वती गोसाईं	असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, हिंदी स्नातकोत्तर विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आणंद.
डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.
डॉ. सुनिल परमार	असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, म्युनिसिपल आर्ट्स एंड अर्बन बैंक साइंस कॉलेज, महेसाना.
डॉ. महारुद्र प्रताप सिंह चौहान	असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

परामर्शक :

प्रो. अलोक गुप्त	(सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.
प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी	
डॉ. गार्गी शाह	

आवरण सज्जा :

सुश्री मार्मी मकवाणा	ग्राफिक डिजाइनर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद

ISBN : 978-93-5598-637-5

© अप्रैल, 2025 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित. यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी. ए. (ऑनर्स)
स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC)
HNDSEC–101
अनुवाद और उसकी प्रविधि

विषय सूची

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृ. सं.
1	अनुवाद : अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्व	5-12
2	अनुवाद के प्रकार	13-26
3	अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ	27-37
4	अनुवाद प्रक्रिया	38-44
5	अनुवाद की शैलियाँ	45-51
6	अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद	52-59
7	सर्जनात्मक अनुवाद का एक नमूना 'कंकू'	60-72

पाठ्यक्रम परिचय

(पाठ्यक्रम आरंभ करने से पहले विद्यार्थी कृपया इसे अवश्य पूरा पढ़ें)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा निर्देशित चारवर्षीय बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी अध्ययन कार्यक्रम अंतर्गत यह 2 क्रेडिट का स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम) प्रस्तुत है.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP–2020) का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को बहु-विषयक, कौशल-आधारित, रोजगारोन्मुख तथा जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वे अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक दक्षताओं का भी विकास कर सकें. इसी दृष्टि से स्नातक स्तर पर स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC) को पाठ्यक्रम संरचना में विशेष स्थान दिया गया है.

प्रस्तुत HNDSEC–101 : 'अनुवाद और उसकी प्रविधि' एक ऐसा ही कौशल-वर्धक पाठ्यक्रम है, जो विद्यार्थियों को अनुवाद के सैद्धांतिक आधार और व्यावहारिक प्रक्रियाओं से परिचित कराता है. यह पाठ्यक्रम भाषा, साहित्य, प्रशासन, न्याय, शिक्षा, मीडिया, विज्ञान एवं तकनीकी जैसे विविध क्षेत्रों में अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है.

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी अनुवाद की अवधारणा, स्वरूप, प्रकृति, प्रकार, प्रक्रिया, शैलियों तथा अनुवादक की भूमिका और योग्यता को समझते हैं. साथ ही, अनुवाद से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों—जैसे शब्द-चयन, व्याकरण, सांस्कृतिक संदर्भ, मुहावरों, लोकोक्तियों और साहित्यिक विधाओं के अनुवाद—पर भी स्पष्ट दृष्टि विकसित करते हैं. पाठ्यक्रम में रचनात्मक अनुवाद का उदाहरण शामिल कर विद्यार्थियों में सृजनात्मकता और भाषिक संवेदनशीलता को प्रोत्साहित किया गया है.

NEP–2020 के अनुरूप यह पाठ्यक्रम—

- ✓ बहुभाषिकता को बढ़ावा देता है,
- ✓ भारतीय भाषाओं के सशक्तिकरण में सहायक है,
- ✓ रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाएँ विकसित करता है, तथा
- ✓ विद्यार्थियों को अनुवाद, संपादन, मीडिया, प्रशासनिक सेवाओं और अकादमिक शोध जैसे क्षेत्रों के लिए तैयार करता है.

इस प्रकार, 'अनुवाद और उसकी प्रविधि' पाठ्यक्रम न केवल विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता को सुदृढ़ करता है, बल्कि उन्हें समकालीन सामाजिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक सक्षम और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

इस पाठ्यक्रम में कुल 7 इकाइयाँ हैं. प्रत्येक इकाई का लेखन अलग अलग अनुभवी प्राध्यापकों ने किया है. ये इकाइयाँ वैसी ही हैं, जैसे पारंपरिक विश्वविद्यालयों में होने वाले लेक्चर. जैसे कुछ लेक्चर बहुत अच्छे लगते हैं और तुरंत समझ में आ जाते हैं, वैसे ही कुछ इकाइयाँ एक बार पढ़ते ही समझ में आ जाएँगी; कुछ को एक से अधिक बार पढ़ना पड़ेगा और कुछ ऐसी भी हो सकती हैं जिन्हें पढ़ने से संतुष्टि न मिले अधूरापन लगे, कुछ प्रश्न खड़े हो जाएँ. तब आप उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न कीजिएगा और इस खोज से ही आपकी वास्तविक अध्ययन यात्रा शुरू होगी. जिन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं खोजेंगे, वे ही आपको हमेशा के लिए याद हो जाएँगे और आपके अध्ययन का वास्तविक फल होंगे. आपकी इस अध्ययन यात्रा में यूनिवर्सिटी सदा आपके साथ है. आप अध्ययन संबंधी अपने किसी भी प्रश्न को नीचे लिखी ईमेल आई डी पर भेज सकते हैं. तो अपना अध्ययन आरंभ करें! खूब सारी शुभकामनाएँ!!

हिंदी अध्ययन के लिए संपर्क ईमेल आई डी : hindi@baou.edu.in

इकाई 1 अनुवाद अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्व

रूपरेखा

1.1 *उद्देश्य*

1.2 *प्रस्तावना*

1.3 *अनुवाद का अर्थ और स्वरूप*

1.4 *अनुवाद की प्रकृति*

1.5 *अनुवाद की आवश्यकता*

1.6 *अनुवाद का महत्व*

1.7 *सारबिंदु*

1.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

1.9 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

1.1 *उद्देश्य*

इस इकाई में अनुवाद का अर्थ, स्वरूप, प्रकृति आवश्यकता और महत्व के बारे में बताया गया है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- *अनुवाद के अर्थ और स्वरूप से परिचित हो सकेंगे.*
- *अनुवाद की प्रकृति को समझ सकेंगे.*
- *अनुवाद की आवश्यकता और महत्व को जान सकेंगे.*
- *अनुवाद के महत्व को जान सकेंगे.*

1.2 *प्रस्तावना*

मौलिक रचना की तरह अनुवाद भी किसी भी देश या समाज के साहित्य और संस्कृति का दपर्ण होता है. व्यक्ति व्यक्ति में परस्पर विचार विनिमय हेतु भाषा का जन्म हुआ. एक ही क्षेत्र में रहेनेवाले लोगों की भाषा एक जैसी होती है, लेकिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में रहनेवाले व्यक्तियों की भाषा भिन्न-भिन्न होती है. दो भिन्न भाषा भाषी लोगों के बीच विचारों का आदान प्रदान करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है. अनुवाद की परंपरा प्राचीन है, परंतु आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप विश्व में परस्पर देशों के संपर्क बढ़ गये हैं. शैक्षिक प्रगति के परिणाम स्वरूप व्यक्तिका बहुभाषी बनना अति आवश्यक है.

1.3 अनुवाद का अर्थ और स्वरूप

'अनुवाद' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'वद्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'बोलना' या 'कहना' होता है. 'वाद' का अर्थ 'कहने की क्रिया' अथवा 'कही हुई बात' होता है. 'वाद' से पहले 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से 'अनुवाद' शब्द बनता है. 'अनु' का अर्थ है बाद में या पीछे.

हिन्दी भाषा में अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना. अनुवाद शब्द के लिए अंग्रेजी में Translation और फारसी में 'तर्जुमा' शब्द चलते हैं. जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा कहा जाता है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है, उसे 'लक्ष्य' भाषा कहते है. 'अनुवाद' भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है.

- स्वरूप

अनुवाद मूलतः एक सृजन प्रक्रिया है. अनुवादक पहले मूलकृति के भाव को आत्मसात करता है. जहाँ तक मूल कृति की भूमिका होती है. भाव एक बार आत्मसात कर लेने से वह भाव अनुवादक के हो जाते हैं.

विद्वानों में अनुवाद के स्वरूप को लेकर वैचारिक मतभेद देखने को मिलता है. कुछ विद्वान अनुवाद के स्वरूप के अंतर्गत उसकी प्रकृति को अन्तः निहित मानते हैं तो भाषाविज्ञानी अनुवाद के प्रकार को उसका स्वरूप मानते हैं. अनुवाद को हम अगर सही रूप में देखें तो डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव का जो मत है उससे सहमत हो सकते हैं. उन्होंने अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उसे दो वर्गों में बाँटा है :-

(1) अनुवाद का सीमित स्वरूप
(2) अनुवाद का व्यापक स्वरूप

अनुवाद के सीमित स्वरूप के अंतर्गत दो आयाम हैं (1) पाठधर्मी (2) प्रभावधर्मी. अनुवाद के सीमित रूप में एक भाषा में निहित अर्थ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है. 'पाठधर्मी' अनुवाद के केन्द्र में स्रोत भाषा पाठ है. इस प्रकार के अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल कथ्य के प्रति ईमानदार रहे और अनुवाद करते समय मूल कथ्य की आत्मा को सुरक्षित रखें. इस प्रकार के अनुवाद के अंतर्गत कार्यालयी, तकनीकी, तथ्यात्मक विषय आते हैं. 'प्रभावधर्मी' अनुवाद में स्रोत भाषा पाठ के प्रभाव को पकड़ने का प्रयत्न किया जाता है. साहित्यिक विषयों में इस प्रकार का अनुवाद होता है.

अनुवाद के व्यापक स्वरूप के अंतगर्त अनुवाद के अर्थ का प्रतीकातरण होता है. इसको तीन आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है (1) अंतःभाषिक अनुवाद (2) अंतर भाषिक अनुवाद (3) अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद. अंतःभाषिक अनुवाद एक ही भाषा का अनुवाद होता है. अंतरभाषिक अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया

जाता है. अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद में भाषा के लिखित प्रतीकों को दृश्य माध्यम में प्रकट किया जाता है.

अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु निर्माण का कार्य करता है. रूढ़ अर्थ में कहें तो अनुवाद दो भाषाओं का संवाद है. स्रोत भाषा के बाद लक्ष्य भाषा में संवाद है.

1.4 *अनुवाद की प्रकृति*

विद्वानों में अनुवाद की प्रकृति को लेकर पर्याप्त मतभेद देखने को मिलता है. विद्वानों का एक वर्ग अनुवाद को विज्ञान के रूप में देखता है, तो दूसरा कला के रूप में तो तीसरा वर्ग शिल्प के रूप में. इसीलिए अनुवाद की प्रकृति को लेकर प्रश्न उठता है कि (1) *क्या अनुवाद विज्ञान है?* (2) *क्या अनुवाद कला है?* (3) *क्या अनुवाद शिल्प है?*

(1) *अनुवाद : विज्ञान के रूप में*

अनुवाद को विज्ञान मानने वालों में महत्वपूर्ण योगदान नाइडा का है. नाइडा के अनुसार अनुवाद प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत स्वीकृत है. भाषा वैज्ञानिक के अनुवाद प्रक्रिया में पहले स्रोत भाषा के लक्ष्य का द्विकोडीकरण होता है. उसके बाद उसका लक्ष्य भाषा में पुन: कोडीकरण किया जाता है. यह प्रक्रिया वैज्ञानिक है. इसमें नाइडा ने अनुवाद कार्य के तीन चरण की बात की है (1) *अनुवाद द्वारा स्रोत भाषा के भावों का ग्रहण* (2) *उसका मानसिक रूप से विश्लषेण और भाषान्तरण* (3) *लक्ष्य भाषा में उसका समायोजन एवं उसकी अभिव्यक्ति अनुवाद को विज्ञान मानने में कुछ निश्चित नियमों को मानकर चलना पड़ता है* (1) *पहली बात यह है कि अनुवादक को तटस्थ होकर, ईर्ष्या द्वेष से मुक्त होकर, सत्यनिष्ठा के साथ अनुवाद करना चाहिए.*

(2) *अनुवादक को स्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को समझने के लिए कोश, व्याकरण आदि 'उपकरणों' का आधार लेना पड़ता है.*

(3) *अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनियों, शब्दों, रूपों और रचनाओं की व्यवस्था को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करना चाहिए. भाषा वैज्ञानिक भोलानाथ तिवारी का मानना है - "अनुवाद करने की पूर्व पीठिका, जो अनुवादक के मस्तिष्क में चिन्तन के रूप में होती है, वह पूर्णत: व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, यदि ऐसा न होता, तो मशीनी अनुवाद सम्भव ही नहीं होता."*

(2) *अनुवाद : कला के रूप में*

कला का शाब्दिक अर्थ "कौशल" या "विद्या" होता है. "नालंदा विशाल शब्द सागर" में कला का अर्थ "किसी कार्य को भलीभाँति करने का कौशल, किसी कार्य को नियम तथा व्यवस्था के अनुसार करने का कौशल अथवा विद्या है."

अनुवाद केवल वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं है, उसके लिए अनुवादक की कला भी आवश्यक है. क्योंकि अनुवाद कलाकार की सर्जना का पुन: सर्जन है. कलाकार के

लिए प्रतिभा की आवश्यकता होती है और वह प्रतिभा सहज होती है. अनुवादक भी कलाकार होता है. मूल कलाकार अपने विचारों, भावों, कल्पनाओं की अपनी कला में अभिव्यक्त करता है और अनुवादक उसका पुनः सर्जन करता है. पुनः सर्जन करना सरल कार्य नहीं है. इसके लिए अनुवादक में प्रतिभा का होना आवश्यक है. अनुवादक के व्यक्तित्व में अनुवाद-कला होती है. यह कला सहज होती है. डॉ. रीतारानी पालीवाल ने कहा है- "अनुवादक इस अर्थ में कलाकार है कि यह कलाकार की आत्माभिव्यक्ति को अपने में उतारता है, उससे पुनः आत्म साक्षात्कार करता है और तटस्थ भाव से उनको पुनः अभिव्यक्त कर देता है. इस अर्थ में अनुवादक का व्यक्तित्व पुनरुत्पादक कलाकार का व्यक्तित्व है."

(3) *अनुवाद : शिल्प के रूप में*

कुछ विद्वान अनुवाद को विज्ञान और कला के साथ-साथ शिल्प भी मानते हैं. "नालंदा विशाल शब्दसागर" में शिल्प का कोशगत अर्थ है-"कोई वस्तु हाथ से बनाकर तैयार करने का काम, दस्तकारी, कारीगरी अथवा कला सम्बन्धी व्यवसाय." जिस प्रकार कोई भी कौशल अभ्यास से विकसित की जा सकती है. इसका मूल भाव यह है कि अनुवाद कला नहीं है, उसमें प्रशिक्षण भी आवश्यक है. वह उपयोगी कला है. अनुवाद को शिल्प इसीलिए माना जाता है कि विद्या और विषय के अनुसार इसका शिल्प बदलता है और इसके लिए प्रशिक्षण जरूरी हो जाता है.

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अनुवाद न पूर्णरूप से विज्ञान है, न कला और न शिल्प. अनुवाद की पृष्ठभूमि की प्रक्रिया इसे विज्ञान बनाती है. पुनः सर्जन की प्रक्रिया इसे कला और प्रयोग की जानकारी इसे शिल्पगत बनाती है. अनुवादक को विभिन्न चरणों पर वैज्ञानिक, कलाकार एवं शिल्प की विभिन्न भूमिकाएँ निभानी पड़ती है. अनुवादक इन तीनों भूमिकाओं में समन्वय करता हुआ अपने कार्य में सफल होता है.

- *बोध प्रश्न*

  - *रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.*

(1) *अनुवाद के लिए फारसी में ....शब्द चलता है.*

(*भाषान्तर / तर्जुमा*)

(2) *अनुवाद को अंग्रेजी में ....कहा जाता है.*

(Translation/Translatum)

(3) *अनुवाद के स्वरूप को ....वर्गों में बाँटा जाता है.*

(*दो / तीन*)

(4) *अनुवाद दो भाषाओं के बीच ....निर्माण का कार्य करता है.*

(*सेतु / दूरी*)

1.5 अनुवाद की आवश्यकता

आज के युग में अनुवाद की आवश्यकता है. विभिन्न भाषाओं में विविध व्यक्तियों के विचारों को समझने में अनुवाद सहायक होता है. निम्नलिखित कारणों हेतु अनुवाद की आवश्यकता है :-

(1) भावनात्मक एकता

भावनात्मक एकता स्थापित होने से मनुष्य मनुष्य के बीच दूरियाँ कम हो जाती हैं. भिन्न-भिन्न भाषी लोग एक-दूसरे की भावनाएँ, सुख दुःख समझ सकते हैं. मानवता का संवर्धन होता है.

(2) ज्ञानवृद्धि

अनुवाद से ज्ञान की वृद्धि होती है. ज्ञान-विज्ञान की सभी जानकारी हमारी भाषा में प्राप्त नहीं है. उसे हम अनुवाद के माध्यम से उपलब्ध कर सकते हैं. आज के युग में अनुवाद का कार्य वरदान है.

(3) आपसी समन्वय

अनुवाद के माध्यम से एक भाषाभाषी समाज का दूसरे भाषाभाषी समाज के साथ समन्वय स्थापित किया जाता है. बहुभाषी राष्ट्र में एक-दूसरे की सभ्यता और संस्कृति का परिचय अनुवाद से होता है. समाज के आचार-विचार, पूजा-पाठ, वेशभूषा, व्रत-उपवास, सामाजिक-सांस्कृतिक विधि विधान आदि का परिचय अनुवाद से होता है.

(4) अन्य संस्कृतियों से परिचय

अनुवाद के माध्यम से विदेशी राष्ट्रों की सभ्यता और संस्कृति का परिचय होता है. किसी भी राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय उस राष्ट्र का साहित्य होता है. भारत के 'रामायण', 'भगवद्गीता', 'महाभारत' जैसे ग्रंथ भारत की प्राचीन सभ्यता का परिचायक हैं. प्रेमचंद के 'गोदान' में अभिव्यक्त किसान जीवन का पता अनुवाद के कारण होता है.''

(5) राष्ट्रीय एकात्मकता

भारत जैसे देश में अनेकता में एकता स्वाभाविक है. जाति, धर्म, व्यवसाय, प्रदेश, भिन्न-भिन्न होने के कारण भारत में अनेकता देखने को मिलती है. आज राष्ट्रीय एकात्मकता अनुवाद के माध्यम से सम्भव है.

(6) अन्य राष्ट्रों की जानकारी

अनुवाद के माध्यम से अन्य राष्ट्रों की जानकारी मिलती है. विश्व में जितने राष्ट्र हैं उनकी सभ्यता, संस्कृति, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन, धर्म का परिचय हमें उनके साहित्य के अनुवाद से ही मिलता है.

(7) *व्यापार वृद्धि*

व्यापारियों को संप्रेषण के लिए अनुवाद का आश्रय लेना पड़ता है. अंतर्राष्ट्रीय जगत में अनुवाद के कारण व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिलती है.

1.6 *अनुवाद का महत्व*

अनुवाद के महत्व को हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं :-

(1) *ज्ञान विज्ञान की जानकारी के लिए अनुवाद*

समय के अनुसार ज्ञान विज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है. समस्त संसार को विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने छोटा बना दिया है, ऐसी स्थिति में अन्य देशों से जानकारी के लिए अनुवाद आवश्यक है.

(2) *अनुवाद एक व्यवहार उपयोगी शास्त्र है*

अनुवाद कला, विज्ञान, राजनीति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि की तरह व्यवहार उपयोगी शास्त्र है. इसका विकास मनुष्य की सामाजिक आवश्यकताओं के कारण हुआ है. जिस प्रकार भाषा मनुष्य के बीच सामाजिक संपर्क का साधन है, उसी तरह विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच अनुवाद सेतु की भूमिका निभाता है.

(3) *सांस्कृतिक विनिमय की दृष्टि से अनुवाद*

किसी भी देश की पहचान उसकी संस्कृति से होती है. भारत बहुभाषी देश है. दो भिन्न देशों की संस्कृति समझने के लिए अनुवाद आवश्यक है. अनुवाद से दो भिन्न भाषा-भाषी लोग एक दूसरे की संस्कृति जान सकते हैं. इसीलिए सांस्कृतिक विनिमय की दृष्टि से अनुवाद का विशेष महत्व है.

(4) *राजनैतिक आदान-प्रदान की जरूरत के लिए*

राजनैतिक आदान-प्रदान के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. आज का युग राजनैतिक संबंधों का युग है. दो देशों के नेता आपस में जब मिलते हैं, तब उन दोनों को बातचीत करने के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक होता है. इस दृष्टि से अनुवाद का राजनैतिक महत्व है.

(5) *सभी भाषाओं का संपर्क स्थापित करने के लिए*

युगों से अनुवादक अनुवाद करके सभ्यता और विकास में सृजनात्मक योगदान दे रहे हैं. प्रत्येक संस्कृति की अपनी पहचान होती है. अनुवाद के जरिये विभिन्न संस्कृति और संस्कृति के विकास में सहयोगी होते हैं.

(6) *मानव जाति के विकास के लिए*

मानव जाति के विकास के लिए अनुवाद जरूरी है. अनुवाद के द्वारा एक-दूसरे देश की सभ्यता, संस्कृति से परिचय होता है. अगर शेक्सपियर को जानना हो तो अंग्रेजी भाषा के अलावा उसके अनुवाद की भाषा से उसके साहित्य से परिचित हो सकते हैं. इस तरह से मानव जाति के विकास के लिए अनुवाद आवश्यक है.

(7) *तुलनात्मक अध्ययन के लिए*

तुलनात्मक अध्ययन के लिए अनुवाद की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता. दो भाषाओं की तुलना से मानव मनोविज्ञान के अनेक अज्ञात तथ्यों का रहस्य उद्घाटन किया जा सकता है. अलग-अलग विधाओं में, अलग-अलग भाषाओं में कार्य हो रहा है. ये हमें दुनिया के विविध विषयों का ज्ञान देता रहता है.

(8) *विदेशी भाषा के अध्ययन के लिए*

किसी भी विदेशी भाषा का अध्ययन अनुवाद के माध्यम से किया जा सकता है. आरंभ में विदेशी भाषा की बुनियादी शिक्षा अनुवाद के माध्यम से दी जाती है और अनुवाद के द्वारा ही फ्रेंच, जर्मन, चीनी, अंग्रेजी आदि भाषाओं को सीखा जा सकता है. अनुवाद के द्वारा ही विदेशी भाषाओं के भाषा शास्त्र, भाषाविज्ञान एवं साहित्य से परिचय स्थापित किया जाता है.

(9) *जीविका (रोजी-रोटी) कमाने के साधन के रूप में*

अनुवाद जीविका कमाने के साधन बनने में उपयुक्त है. केन्द्रीय कार्यालयों में हर साल अनुवाद के पद भरे जाते हैं. कई विश्वविद्यालयों में अनुवाद, डिप्लोमा या डिग्री कोर्स पढ़ाया जाता है. समाचार पत्रों, मीडिया, यात्रा में गाईड, सरकारी कार्यालय, शिक्षाक्षेत्र आदि में अनुवादक की जरूरत रहती है. इस तरह अनुवाद नौकरी या पैसा कमाने में काम आता है.

1.7 *सारबिंदु*

विद्यार्थी मित्रो! आपने इस इकाई में अनुवाद का अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्व का अध्ययन किया है. आशा है, आप इन सभी बिन्दुओं से अच्छी तरह परिचित हो गये होगे, आइये! इकाई में आयी प्रमुख बातों को एक बार फिर से दोहरा लें.

- *'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है पुनः कथन.*
- *'अनुवाद' शब्द के लिए अंग्रेजी में* Translation *और फारसी में 'तर्जुमा' शब्द चलते हैं.*
- *एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में संप्रेषित करने को अनुवाद कहा जाता है.*

- अनुवाद भावात्मक एकता, ज्ञानवृद्धि, आपसी समन्वय, अन्य संस्कृति के परिचय के लिए, राष्ट्रीय एकात्मकता, अन्य राष्ट्रों की जानकारी, व्यापार वृद्धि आदि के लिए आवश्यक हैं.

इक्कीसवी शताब्दी अन्तराष्ट्रीय शताब्दी है और इस विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान महत्वपूर्ण रहा है.

1.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली :

- बोधप्रश्न

(क) निबंधात्मक प्रश्न.

(1) अनुवाद का अर्थ बताते हुए अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए.
(2) अनुवाद की परिभाषा बताते हुए अनुवाद की प्रकृति पर विचार कीजिए.
(3) अनुवाद की आवश्यकता और महत्व को समझाइए.

(ख) टिप्पणी लिखिए.

(1) अनुवाद की आवश्यकता
(2) अनुवाद का अर्थ
(3) अनुवाद का स्वरूप
(4) अनुवाद की प्रकृति

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

(अ) सही गलत बताइए.

(1) भारत की अखंडता और एकता को बरकरार रखने के लिए अनुवादक की बहुत आवश्यकता है.
(2) क्या अनुवाद को विज्ञान मानने वालों में महत्वपूर्ण योगदान नाइडा का नहीं है?
(3) अनुवाद से ज्ञान में वृद्धि होती है.
(4) समाचारपत्रों, मीडिया, सरकारी कार्यालय आदि में अनुवादक की जरूरत नहीं रहती है.
(5) अनुवाद एक व्यवहार उपयोगी शास्त्र है.

1.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ. सुरेशकुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, आवृत्ति 2011
- अनुवाद विमर्श सं. प्रा. राजेन्द्र इंगोले, सारंग प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2015
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–2008

इकाई 2 अनुवाद के प्रकार

रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 अनुवाद के प्रकार

2.3.1 माध्यम के आधार पर

2.3.2 प्रक्रिया के आधार पर

2.3.3 पाठ के आधार पर

2.3.3 विषयवस्तु एवं प्रकृति के आधार पर

2.4 सारबिंदु

2.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

2.6 उपयोगी पाठ्यसामग्री

2.1 उद्देश्य

इस इकाई में अनुवाद के प्रकारों के बारे में बताया गया है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- माध्यम के आधार पर अनुवाद के प्रकार जान सकेंगे.
- प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के प्रकार से अवगत होंगे.
- पाठ के आधार पर अनुवाद के प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- विषयवस्तु एवं प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार से परिचित हो सकेंगे.

2.2 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई में आपने अनुवाद का अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्व के बारे में जाना. इस इकाई में आप अनुवाद के प्रकारों का अध्ययन करेंगे. 'अनुवाद' भाषाओं के बीच संप्रेषण का काम करता है. अनुवाद विशिष्ट प्रकार का भाषा व्यवहार है और उसके अनेक प्रकार या रूप हैं.

2.3 अनुवाद के प्रकार

विभिन्न विद्वानों ने अनुवाद के प्रकारों की चर्चा अनेक आधारों पर की है. डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद के प्रकारों पर विचार गद्य-पद्य के आधार पर किया है, तो डॉ. एन. ई. विश्वनाथन अय्यर ने लिप्यंकन और लिप्यंतरण को अनुवाद के भेद के

रूप में स्वीकार किया है. अनुवाद के प्रकारों का वर्गीकरण मुख्यत: चार आधारों पर किया जाता है :-

(1) माध्यम के आधार पर
(2) प्रक्रिया के आधार पर
(3) पाठ के आधार पर
(4) विषयवस्तु एवं प्रकृति के आधार पर

2.3.1 माध्यम के आधार पर

माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार हैं :-

(1) प्रतीक प्रकार
(2) भाषा प्रकार
(3) लेखन प्रकार

(1) प्रतीक प्रकार के तीन प्रकार हैं **:-**

(i) अन्वयान्तर (अंत: भाषिक अनुवाद)

किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त हुए अर्थ का, उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था द्वारा अन्तरण अन्त: भाषिक अनुवाद कहलाता है.

उदा. दिनकर का खंडकाव्य 'रश्मिरथी'

इस खंडकाव्य को जब नाटक के रूप में व्यक्त किया जाता है तो उसे अन्त: भाषिक अनुवाद का प्रकार कहा जा सकता है.

(ii) अन्तरभाषिक अनुवाद (भाषान्तर)

किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त हुए अर्थ का, दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा अन्तरण अन्तरभाषिक अनुवाद कहलाता है. इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक का द्विभाषिक होना अनिवार्य है.

उदा. कालिदास के संस्कृत नाटकों का तेलगू में और तमिल भाषा के "तिरुक्कुरल" का हिन्दी में अनुवाद अन्तरभाषिक अनुवाद का उदाहरण है.

(iii) प्रतीकान्तर (अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद)

प्रतीकान्तर अनुवाद में प्रतीक की व्यवस्था का आधार तो भाषा होता है, लेकिन प्रतीक भाषान्तर व्यवस्था की अपेक्षा रखती है.

(2) भाषा प्रकार

(i) उपादान सापेक्ष
(ii) रूप सापेक्ष

(i) *उपादान सापेक्ष : उपादान सापेक्ष के अंतर्गत दो भेद आते हैं* (1) *अनुवाद* (2) *आशु अनुवाद. अनुवाद का उपादान लेखन होता है और आशु अनुवाद का उपादान ध्वनि होता है. दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद लिखित होता है और आशु अनुवाद मौखिक होता है.*

(ii) *रूप सापेक्ष : रूप सापेक्ष के अंतर्गत दो भेद हैं :-*

(1) *पद्यानुवाद*

(2) *गद्यानुवाद*

पद्य का पद्य में अनुवाद पद्यानुवाद है और गद्य का गद्य में अनुवाद गद्यानुवाद है.

(3) *लेखन प्रकार*

(1) *लिप्यंकन*

(2) *लिप्यन्तरण*

(1) *लिप्यंकन* **(Transcription)**

लिप्यंकन में स्रोत भाषा के शब्द की वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार मानकर लक्ष्य भाषा में शब्द लिखा जाता है.

(2) *लिप्यन्तरण* **(Transliteration)**

लिप्यन्तरण में स्रोत भाषा की वर्तनी में प्रयुक्त लिपि चिन्हों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में प्राप्त लिपि चिन्हों को प्रतिस्थापित किया जाता है.

2.3.2 *प्रक्रिया के आधार पर*

प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं :-

(1) *पाठधर्मी अनुवाद*
(2) *प्रभावधर्मी अनुवाद*

(1) *पाठधर्मी अनुवाद : पाठधर्मी अनुवाद का आयाम अपनी प्रकृति और प्रयोजन में वाक्य के विन्यास और अर्थ विज्ञान पर आधारित है.*

(2) *प्रभावधर्मी अनुवाद : प्रभावधर्मी अनुवाद, पाठ को लेखक और पाठक के बीच सम्बन्ध स्थापना का एक उपकरण मानता है, जिसका यह पाठक पर पड़े प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन करता है.*

2.3.3 ***पाठ के आधार पर अनुवाद के प्रकार :-***

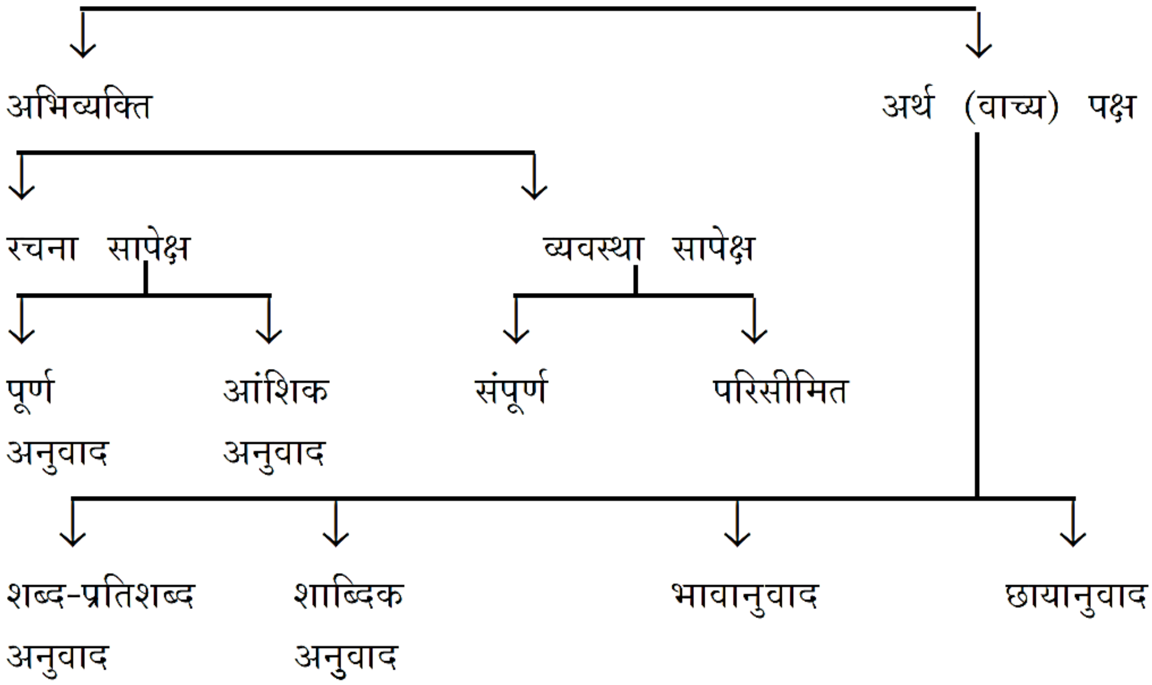

जेरसी फेटफोर्ड Linguistic Theory of Translation ***में अनुवाद निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया है :-***

(1) ***पाठ्य विस्तार***

(i) ***पूर्णानुवाद***

(ii) ***आंशिक अनुवाद***

(2) ***भाषास्तर***

(i) ***समस्त***

(ii) ***सीमित***

(3) ***भाषा शैली***

(i) ***मुक्त अनुवाद***

(ii) ***शाब्दिक अनुवाद***

(iii) ***शब्दशः अनुवाद***

2.3.4 ***विषयवस्तु या प्रकृति के आधार पर***

विषयवस्तु एवं प्रकृति के आधार पर अनुवाद का दो तरह से विभाजन किया जाता है.

(1) ***साहित्यिक अनुवाद***

(2) ***साहित्येतर अनुवाद***

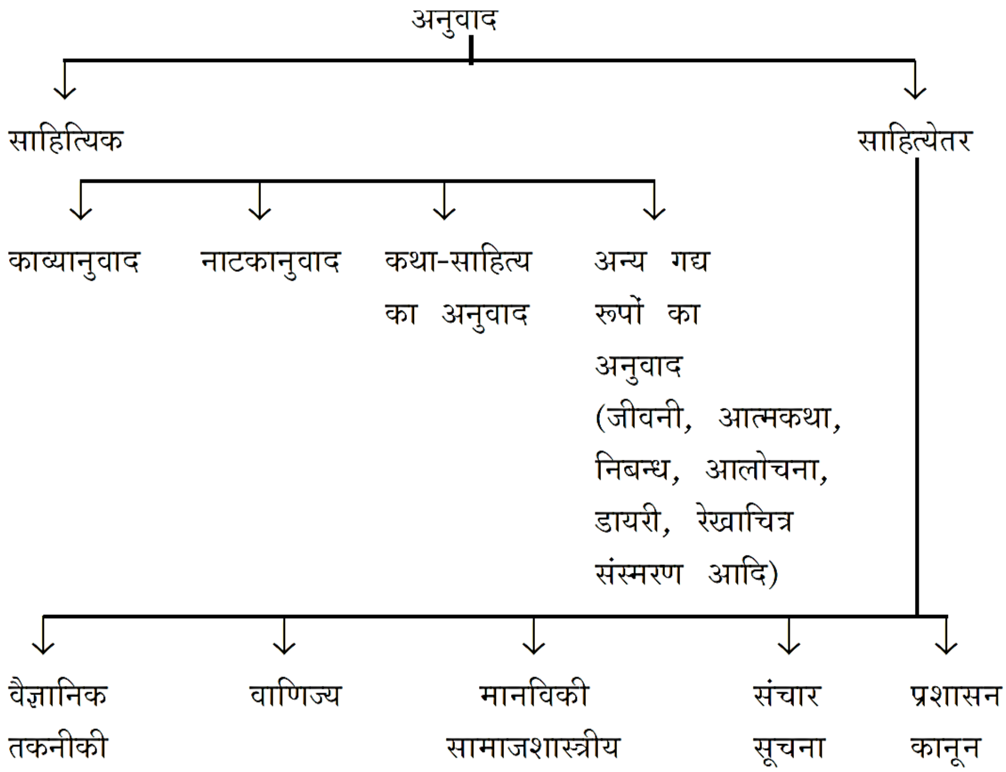

(1) *साहित्यिक अनुवाद*

साहित्यिक अनुवाद को शैली प्रधान अनुवाद भी कहा जाता है.

(i) *काव्यानुवाद : पद्यनुवाद का ही पर्याय शब्द काव्यानुवाद है. कविता साहित्य की सर्वाधिक भावपूर्ण विधा है. पद्यानुवाद से तात्पर्य केवल कविता का ही अनुवाद नहीं है, परंतु पद्य में आनेवाली तमाम विधाएँ उन सबका अनुवाद पद्यानुवाद है. कुछ विद्वानों का मत है कि काव्यानुवाद असंभव है, किन्तु इतना कह देने भर से यह सत्य नहीं होता. काव्यानुवाद हुए हैं. काव्य का अनुवाद करने के लिए मूल के सृजन की मनोभूमि को पकड़ना आवश्यक होता है. इसके लिए अनुवादक को कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है और यह काम एक संवेदनशील अनुवादक ही कर सकता है. जो स्वयं कवि हो या कम से कम कवि हृदय रखता हो. इसीलिए कहा जाता है – "काव्य का सफल अनुवाद कवि द्वारा ही हो सकता है." अनुवादक को ध्यान रखना होता है कि काव्यानुवाद केवल शब्दों का अनुवाद न हो. उसमें भाव या नवीन सृजनात्मकता आवश्यक है. हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और अनुवादक हरिवंशराय बच्चन 'उमर खय्याम की रूबाइयाँ' की भूमिका में अनुवाद के बारे में लिखते हैं, –"अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा. भावों को ही मैंने प्रधानता दी."*

काव्यानुवाद करते समय काव्य के रूप को लेकर भिन्न-भिन्न मत देखने को मिलते हैं. कुछ विद्वानों के अनुसार मूल रचना के अनुसार ही छंदों का प्रयोग होना चाहिए तो कुछ अनुवादक का मानना है कि लयात्मक गद्य का प्रयोग किया जाना चाहिए तो कुछ विद्वानों के अनुसार मुक्त छंद में अनुवाद किया जाना चाहिए.

काव्यानुवाद की आदर्श स्थिति यह है कि मूल रचना के सूक्ष्म, लय, संगीत को लक्ष्य रचना में लाने का प्रयास करना चाहिए.

(ii) *नाटकानुवाद : काव्य के अभिनेय प्रकार को नाटक कहा जाता है. सामान्य रूप से नाटकानुवाद के दो भेद होते हैं :-*

(1) *पाठ्यानुवाद*

(2) *मंचीय अनुवाद*

पाठ्यानुवाद में नाटक के पाठ का शब्दानुसार या वाक्यानुसार अनुवाद किया जाता है. मंचीय अनुवाद एक तरह से पुनः सृजन है. मंचीय अनुवाद अभिनय, रस एवं प्रभाव को ध्यान में रखकर किये जाते हैं. मंचीय अनुवाद वही कर सकता है जिसे नाट्य लेखन और रंगमंच दोनों का ज्ञान हो.

मूल नाटक कभी-कभी रंगमंच की दृष्टि से पूर्ण सहज होता है, किन्तु अनूदित होने पर असफल रहता है. इसका कारण है कि व्यंजित अर्थ, हास्य-व्यंग्य आदि सांस्कृतिक परिवेश से अभिन्न रूप से जुड़े रहते हैं जो अनुवाद करते समय स्पष्ट नहीं हो पाते. इस संदर्भ में अनुवाद की दो प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं. भारतेन्दु और जी.पी. श्रीवास्तव जैसे पुराने नाटककारों ने स्रोत भाषा के सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक परिवेश से परिवर्तित कर दिया. भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बंधु' नाम से किया और भारतीय वातावरण प्रस्तुत किया. नाटकानुवाद का दूसरा दृष्टिकोण मूल नाटक के सांस्कृतिक परिवेश की रक्षा करते हुए अनुवाद को प्रस्तुत करना है.

हिन्दी में अनेक सफल नाटकानुवाद हुए हैं. राजा लक्ष्मणसिंह ने 'शंकुतला', भारतेन्दु ने बांग्ला नाटकों के अनुवाद किये हैं. प्रेमचंद ने 'गाल्स वीं', राजेन्द्र यादव ने चेखव के नाटकों का अनुवाद करके राष्ट्रीय रंगमंच की संभावनाओं को विकसित किया है.

(iii) *कथा-साहित्य का अनुवाद*

कथा साहित्य के अनुवाद ने विश्व साहित्य की परिकल्पना को उजागर किया है. भारत की पंचतंत्र की कथा के अनुवाद से पश्चिम ने मौलिक कथा साहित्य लिखने की प्रेरणा प्राप्त की. रवीन्द्रनाथ, बंकिमचन्द्र, धूमकेतु, प्रेमचंद, टाल्सटॉय, अमृता प्रीतम आदि उपन्यासकार अनुवाद के माध्यम से पूरे देश में जाने जाते हैं. कथा साहित्य के अनुवादक को चार बातों का ध्यान रखना पड़ता है :-

(1) *कथातत्व*

(2) *शैली*

(3) *देशकाल*

(4) *संस्कृति*

कथासाहित्य के अनुवाद करने में देशकाल और संस्कृति का विशेष महत्व होता है, क्योंकि कथा साहित्य जनजीवन का चलता हुआ छायांकन होता है. इसलिए उसमें रीति रिवाज, त्यौहार, जीवनमूल्य, वनस्पतियाँ, सांस्कृतिक स्थान एवं वस्तुएँ आदि का उसमें विशेष महत्व होता है. इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक से अपेक्षा होती है कि वे मूल कृति की संस्कृति एवं परिवेश को पुनः सृजन द्वारा प्रत्यक्ष करा सके.

कथासाहित्य की भाषा जन भाषा से निकट होती है. भाषा-शैली की इन परंपराओं और जीवंत मुहावरों को पकड़ना अनुवाद की सफलता के लिए अनिवार्य है.

(iv) *अन्य गद्य विधाओं के अनुवाद*

अन्य गद्य विधाओं में आत्मकथा, जीवनी, निबन्ध, रेखाचित्र, यात्रा साहित्य, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण और आलोचना का समावेश होता है. इन सभी विधाओं में अनुवाद की संभावनाएँ हैं. परंतु ऐसे अनुवाद के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष पर बहुत कम लोगों ने विचार किया है. गाँधीजी के कारण भारत में आत्मकथा, डायरी आदि का अनुवाद चल पड़ा था. उदाहरण के लिए रामवृक्ष बेनीपुरी रचित 'माटी की मूरते' नामक रेखाचित्र का अनुवाद कई भाषाओं में साहित्य अकादमी द्वारा कराया गया और यह काफी लोकप्रिय भी हुआ.

(2) *साहित्येतर अनुवाद*

(i) *वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद*

विकसित एवं विकासशील देशों में वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की आवश्यकता बनी रहती है. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है - "स्रोत भाषा में व्यक्तवैज्ञानिक सूचनाओं का लक्ष्य भाषा में इस तरह अंतरण करना कि मूल की सूचनाएँ अनुवाद में नष्ट न हो."

साहित्यिक और वैज्ञानिक तकनीकी अनुवाद के बीच मूल अंतर यह है कि साहित्यिक अनुवाद में शैली, अभिव्यंजना, भाव-भंगिमा की प्रमुखता है जबकि वैज्ञानिक अनुवाद में 'कैसे' की अपेक्षा 'क्या' का अधिक महत्व होता है. वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय के विद्वानों एवं छात्रों के लिए होता है.

वैज्ञानिक अनुवाद में अभिव्यक्त विचार ही प्रमुख होता है. इस प्रकार के अनुवाद की पहली विशेषता है कि इस विषय का जानकार ही इसका अनुवाद कर सकता है. इसकी भाषा वस्तुनिष्ठ एवं तथ्यपरक होती है.

(ii) *वाणिज्य अनुवाद*

एक भाषा की वाणिज्य विषयक सामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद करना वाणिज्य अनुवाद कहलाता है. इसमें व्यापार, उद्योग धन्धे, बैंक, फिल्म, विज्ञापन,

पर्यटन आदि क्षेत्र से संबंधित सामग्री का अनुवाद आता है. आधुनिक युग में इस प्रकार के अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है. वाणिज्य अनुवाद का क्षेत्र राष्ट्र के सभी प्रदेशों में फैला होने के कारण इस अनुवाद को काफी महत्व प्राप्त हुआ है. इस प्रकार के अनुवाद में विज्ञापन का विशेष महत्व होता है. विज्ञापन के अतिरिक्त फिल्म डबिंग, व्यावसायिक पत्र, नियमावली, सूचनाएँ, निर्देश सभी प्रकार की सामग्री आती है. इस प्रकार की सामग्री का संबंध प्रशासन एवं कानून से भी होता है. उसके अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग भी होता है किन्तु जनभाषा का प्रयोग ही अपेक्षित है. यूनेस्को, विश्वबैंक, संयुक्त राष्ट्रसंघ, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जैसी अनेक अंतराष्ट्रीय संस्थाओं, फिल्म महोत्सवों तथा ओलम्पिक जैसे खेलों आदि के कारण वाणिज्य अनुवाद की माँग में बढ़ोतरी हो रही है.

(iii) *मानविकी, समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद*

मानविकी और समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद शैक्षणिक दृष्टि से आवश्यक होता है. इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक के पास विषय का सम्यक ज्ञान आवश्यक है. समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि विषयों के लिए पारिभाषिक शब्दों की जानकारी आवश्यक है. आज भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में मातृभाषा में शिक्षा दी जाने लगी है. ऐसे समय में समाजशास्त्रीय विषयों के अनुवाद मातृभाषा में करना आवश्यक हो गया है. इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को पाठक के मानसिक स्तर का पूरा ध्यान रखना चाहिए. भाषा सरल और विषयलक्षी होनी चाहिए तभी अनुवाद लोकप्रिय हो सकता है.

(iv) *सूचना एवं दूर संचार में अनुवाद*

सूचना एवं दूर संचार में अनुवाद में राजनीति एवं कूटनीति से लेकर व्यापार तथा जीवन के तमाम कार्य कलापों एवं विषयों से सम्बन्धित सामग्री का अनुवाद करना होता है. इस प्रकार के अनुवाद में अन्य अनुवादों की अपेक्षा समय प्रबंधन की अपेक्षा रहती है. चाहे दैनिक पत्रों का अनुवाद हो या दूरदर्शन, रेडियो आदि का. अनुवादक के पास कम समय होता है और उन्हें उतने ही समय में सारी सामग्री का अनुवाद करना होता है. इस प्रकार का अनुवाद एक साथ करोड़ो पाठकों एवं श्रोताओं के पास पहुँचता है, इसलिए उसमें रोचकता, संप्रेषणीयता, प्रभावोत्पादकता आदि गुण होने चाहिए. विषयों का व्यापक ज्ञान, व्यापक अध्ययन, समकालीन घटनाओं के प्रति सजगता, शब्दों का भंडार, शीघ्र अनुवाद करने की क्षमता आदि अनुवादकों के लिए अपेक्षित है.

दूर संचार के अनुवाद में अनजान जगहों के नामों, व्यक्ति के नामों, संक्षेपों के अनुवाद आदि की भी समस्याएँ सामने आती हैं. आजकल अंग्रेजी रूप की जगह प्रचलित भारतीय रूप लिखने की प्रवृत्ति मिलती है. जैसे सिलोन की श्रीलंका, काइरो को काहिरा आदि. अत: अनुवादक को पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए.

(v) *प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद*

हमारे देश में अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को प्रमुखता दी जा रही है. अतः हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है. प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत सरकारी पत्र, आलेखन, टिप्पण, सुचनाएँ, परिपत्र, विज्ञापन, रिपोर्ट इत्यादि का समावेश होता है. भारत जैसे बहुभाषिक देश में इस प्रकार का अनुवाद आवश्यक हो जाता है. अन्य देशों की शासन व्यवस्था के परिचय हेतु यह अनुवाद उपयोगी साबित होता है. इस प्रकार का अनुवाद सामान्य जनों के लिए होने के कारण इसकी भाषा सरल होनी चाहिए. इसमें अलंकारिता, घुमावफिराव का निषेध है. इसकी भाषा सरल, सीधी, स्पष्ट तथा सुग्राहय हो. इसके वाक्य यथासंभव छोटे हों, जटिल या पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर सरल एवं सुस्पष्ट शब्दों का प्रयोग हो.

प्रशासनिक शब्दावली की सबसे बड़ी कठिनाई है कि अंग्रेजी शब्द के लिए कभी-कभी भारतीय भाषाओं में एक से अधिक मिलते जुलते शब्द प्राप्त होते हैं. जिससे शब्द चयन में समस्या आती है. जैसे Interest *गोपनीय, अंतरंग आदि. इसी तरह हिन्दी के कुछ शब्दों के लिए अंग्रेजी में एक से अधिक शब्द है जिनका प्रयोग समझकर करना चाहिए. जैसे अनुबंध* Annexture, Contract, *आधिकारिक* Official, Anthoritative, *आलेख* Writing, draft *आदि. प्रशासनिक अनुवाद के लिए आवश्यक है कि उसके प्राविधिक स्वरूप को बनाये रखते हुए भी सरल, स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए प्रयास किया जाय.*

- *प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार*

(क) *शब्दानुवाद*

'शब्दानुवाद' शब्द 'शब्द अनुवाद' से बना है. स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द को ध्यान में रखकर किया गया अनुवाद शब्दानुवाद कहलाता है. इसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति को दृष्टि में न रखकर शब्दशः अनुवाद किया जाता है. इसमें अनुवादक किसी भी शब्द की उपेक्षा नहीं करता. शब्दनुवाद के तीन भेद किये जा सकते हैं :

(i) *शब्द प्रतिशब्द अनुवाद*

(ii) *शब्दक्रम मुक्तशब्दानुवाद*

(iii) *शाब्दिक अनुवाद*

(i) *शब्द प्रतिशब्द अनुवाद* **(Word to Word Translation)**

शब्द प्रतिशब्द अनुवाद में स्त्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द को ध्यान में रखकर शब्दशः अनुवाद किया जाता है. इसमें शब्द के स्तर पर क्रमबद्ध अनुवाद किया जाता है.

जैसे He is going to school.

वह है जा रहा स्कूल.

Rama killed Rawana.

राम मारा रावण को.

इस प्रकार का अनुवाद अच्छा नहीं होता है. इस प्रकार के अनुवाद में लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर ध्यान न देने के कारण अनुवाद हास्यास्पद लगता है.

(ii) *शब्दक्रम मुक्त शब्दानुवाद : शब्दक्रम मुक्त शब्दानुवाद में मूल के प्रत्येक शब्द पर ध्यान देकर अनुवाद किया जाता है, लेकिन इसमें शब्दों के क्रमानुसार अनुवाद नहीं किया जाता. इस अनुवाद में स्रोत भाषा की शैलीगत छाया स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है.*

जैसे – This is to certifie that.....

यह प्रमाणित किया जाता है...

Doctor felt my pulse.

डॉक्टर ने मेरी नब्ज महसूस की.

(iii) *शाब्दिक अनुवाद*

शाब्दिक अनुवाद में प्रत्येक शब्द, वाक्य, उपवाक्य आदि का सूक्ष्मता से ध्यान रखा जाता है. इसमें अर्थ तथा अभिव्यक्ति की सभी बारीकियों को देखा जाता है. इस प्रकार के अनुवादक न मूल की कोई बात छोड़ता है और न उसमें अपनी तरफ से कुछ जोड़ता है. इस तरह का अनुवाद वास्तविक और आदर्श अनुवाद है. विज्ञान, तकनीकी, विधि, ज्योतिष, गणित आदि विषयों के लिए शब्दानुवाद आदर्श माना जाएगा.

जैसे Saving Bank *बचत बैंक*

Angle of Vision *दृष्टिकोण*

(*ख*) *भावानुवाद*

भावानुवाद में मुख्यतः मूल सामग्री के भावों का अनुवाद होता है. जहाँ स्रोत सामग्री का शब्दानुवाद करना असंभव हो जाता है तब वहाँ भावानुवाद करना पड़ता है. ललित साहित्य के लिए भावानुवाद अधिक उपयुक्त होता है. सृजनात्मक प्रतिभा वाला अनुवादक ही इस प्रकार का अनुवाद कर सकता है. जिससे यह अनुवाद हमें सृजनशील लेखन का एहसास कराता है. भावपूर्ण संप्रेषण ही इसकी प्रमुख विशेषता है.

जैसे – Home Government *गृह सरकार*

Home Signal *निकट चिन्ह*

(ग) छायानुवाद

जिस अनुवाद में मूल की छाया मात्र होती है उसे छायानुवाद कहते हैं. इसमें अनुवादक मूल पाठ के शब्द भाव, भाषा और शिल्प से मुक्तहोकर मूल पाठ की छाया को अनुवाद में ढालता है. इस प्रकार के अनुवाद में नाम, स्थान, पात्र, वातावरण, देशकाल आदि का देशीकरण किया जाता है. भारतेन्दु ने शेक्सपियर के "द मर्चेन्ट ऑफ वेनिस" का अनुवाद करते समय पात्रों के नामों का भारतीयकरण कर दिया है.

(घ) रूपांतरण

रूपांतरण शब्द का अर्थ है रूप को बदलना. इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक स्रोत भाषा के पाठ को अपनी रुचि या आवश्यकतानुसार लक्ष्य भाषा में परिवर्तित कर देता है. इसमें मूल सामग्री को कुछ बढ़ाकर, संक्षिप्त कर, सरल कर अथवा विधा के रूप में परिवर्तित कर प्रस्तुत किया जाता है. जैसे मूल सामग्री के उपन्यास को एकांकी नाटक के रूप में परिवर्तित करना, नाटक को उपन्यास या कहानी या अन्य विद्या के रूप में. प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का विष्णु प्रभाकर द्वारा 'होरी' नाम से नाट्य रूपांतरण हुआ है. मन्नू भंडारी के 'महाभोज' उपन्यास का भी नाट्य रूपांतरण हुआ है. आजकल रेडियो और दूरदर्शन पर इस प्रकार के रूपांतरण की प्रवृत्ति को देखने मिलती है.

(ङ) सारानुवाद

सारानुवाद में मूल सामग्री का संक्षिप्त में अनुवाद किया जाता है. इसमें अनुवादक मूल की समग्र बातों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करता है. इस प्रकार के अनुवाद संसद -सभागृह में अधिवेशनों के दौरान राजनेताओं के लंबे भाषण, विविध सभाओं में दिए मंत्रियों, समाज सेवकों, विदेशी प्रमुख अतिथियों, विविध साहित्य सम्मेलनों में साहित्यकारों द्वारा दिए भाषणों का सारानुवाद ही किया जाता है. सारानुवाद का मुख्य उद्देश्य स्रोत भाषा में कही गयी विस्तृत बातों का सार ही प्रस्तुत करना होता है. डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में -"अपनी संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक-सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों के सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद अधिक उपयोगी पाया गया है."

(च) भाषा या टीका परक अनुवाद

भाषा या टीका परक अनुवाद में स्रोत भाषा की मूल की व्याख्या के साथ अनुवाद किया जाता है. इस प्रकार के अनुवाद में भाष्यकार स्पष्टीकरण के लिए अपनी ओर से उद्धरण, उदाहरण और प्रमाण जोड़ सकता है. जैसे आचार्य विश्वेश्वर की 'हिन्दी अभिनव भारती', 'हिन्दी ध्वन्यालोकलोचन' आदि की विद्वतापूर्ण व्याख्याएँ या संस्कृत की काव्यशास्त्रीय रचना 'साहित्य दर्पण' पर डॉ. सत्यव्रतसिंह की व्याख्या, गीता पर बालगंगाधर तिलक का 'गीतारहस्य' आदि इसी प्रकार के अनुवाद हैं. वेदों और उपनिषदों के भाष्य इसी परंपरा में आते हैं.

(छ) *आशु अनुवाद*

किसी वार्ता या संभाषण आदि के अनुवाद को आशु अनुवाद कहा जाता है. दो भिन्न-भाषा-भाषी को संवाद स्थापित करने के लिए दोनों के बीच 'दुभाषिया' होना जरूरी होता है. इसी दुभाषिऐ के जरिए विभिन्न देशों के मंत्रीगण, नेता आदि सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जैसे विषयों पर वार्तालाप कर सकते हैं. यही आशु अनुवाद या वार्तानुवाद है. आशु अनुवाद का भाषा ज्ञान प्रामाणिक एवं गहन होना चाहिए. इस प्रकार का अनुवाद कार्य कठिन होता है, क्योंकि वो व्यक्तियों के बीच आमने सामने ही बिना किसी कोश, संदर्भ ग्रंथ या किसी साधन की सहायता लिए करना पड़ता है. इसी दृष्टि से उस दोनों देशों के इतिहास एवं संस्कृति का ज्ञान होना आवश्यक है.

2.4 सारबिंदु

आशा है, आप अनुवाद के प्रकारों से अच्छी तरह परिचित हो गये होंगे.

आइये! इकाई में आयी प्रमुख बातों को एक बार फिर से दोहरा लें.

- *अनुवाद के प्रकार का वर्गीकरण माध्यम, प्रक्रिया, पाठ और विषय वस्तु या प्रकृति के आधार पर किया जाता है.*
- *माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार प्रतीक, भाषा और लेखन हैं.*
- *प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं: पाठधर्मी अनुवाद और प्रभावधर्मी अनुवाद.*
- *पाठ के आधार पर अनुवाद के दो भेद हैं अभिव्यक्ति और अर्थ (वाच्य) पक्ष.*
- *विषयवस्तु एवं प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार साहित्यिक और साहित्येतर हैं.*
- *साहित्यिक अनुवाद में गद्य और पद्य दोनों विधाओं का अनुवाद किया जाता है.*
- *साहित्येतर अनुवाद में वैज्ञानिक, तकनीकी, वाणिज्य, मानविकी समाजशास्त्रीय, संचार सूचना, प्रशासन कानून आदि का अनुवाद किया जाता है.*
- *प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों में शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण, सारानुवाद, भाषा या टीका परक अनुवाद, आशु अनुवाद है.*
- *अनुवादक श्रेष्ठ अनुवाद के द्वारा दो भाषा संस्कृतियों के बीच पुल का कार्य करता है.*

2.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- बोधप्रश्न

(क) निबंधात्मक प्रश्न

(1) अनुवाद के प्रकारों को समझाइए.

(2) विषयवस्तु या प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों की चर्चा कीजिए.

(3) साहित्येतर अनुवाद के प्रकारों पर विचार कीजिए.

(ख) टिप्पणी लिखिए

(1) माध्यम के आधार पर अनुवाद के प्रकार
(2) कथासाहित्य का अनुवाद
(3) नाटकानुवाद
(4) शब्दानुवाद और छायानुवाद

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(अ) रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए

(1) माध्यम के आधार पर अनुवाद के ....प्रकार है.
(तीन / चार)

(2) काव्यानुवाद का समावेश ....अनुवाद में किया जाता है.
(साहित्येतर / साहित्यिक)

(3) नाटकानुवाद के .... भेद है.
(दो / तीन)

(4) जिस अनुवाद में मूल की छायामात्र होती है उसे ....अनुवाद कहते हैं
(भावानुवाद / छायानुवाद)

(5) वाणिज्य अनुवाद का समावेश ....अनुवाद में किया जाता है.
(साहित्यिक / साहित्येतर)

(ब) जोड़ा मिलाइए

(क)	**(ख)**
(1) साहित्यिक अनुवाद	(क) वाणिज्य अनुवाद
(2) साहित्येतर अनुवाद	(ख) काव्यानुवाद
(3) शब्दानुवाद का भेद	(ग) भावों का अनुवाद
(4) भावानुवाद	(घ) शाब्दिक अनुवाद)

- *सही गलत बताइए*

  (1) *माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार हैं.*

  (2) *आशु अनुवाद लिखित होता है.*

  (3) *साहित्यिक अनुवाद में वाणिज्य अनुवाद का समावेश किया जाता है.*

  (4) *पद्यानुवाद का पर्याय शब्द काव्यानुवाद है.*

  (5) *भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' नाम से किया था.*

2.6 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रतिभा अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर* 2005.
- *अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्णाकुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली* 2008.
- *अनुवाद चिन्तन दृष्टि और अनुदृष्टि, डॉ. सु. नागलक्ष्मी, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा* (*उ.प्र.*) 2009

इकाई 3 अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ

रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 अनुवाद का महत्व

3.4 अनुवाद की चुनौतियाँ

3.5 सारबिंदु

3.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

3.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

3.1 उद्देश्य

इस इकाई का विषय 'अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ' है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार से जान सकेंगे.
- विविध क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व को समझ सकेंगे.
- अनुवाद कार्य में आने वाली चुनौतियों के बारे में जान सकेंगे.
- साहित्य, विधि, न्याय, शिक्षा, जनसंचार, धर्म, फिल्म उद्योग आदि में अनुवाद की आवश्यकता और उसके महत्व के बारे में विस्तार से जान पाएँगे.
- अनुवाद के विस्तृत कार्यक्षेत्र के बारे में जान पाएँगे.
- आज के आधुनिक युग में अनुवाद की क्या आवश्यकता है उसके बारे में जान सकेंगे.

3.2 प्रस्तावना

अनुवाद भाषाओं और संस्कृतियों के बीच एक पुल की तरह काम करता है. यह विचारों, भावनाओं और ज्ञान को साझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. इसके द्वारा साहित्य, विज्ञान, तकनीक और कला को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है. साथ ही, यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, राजनीति, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी आवश्यक है.

अनुवाद केवल शब्दों को बदलने का कार्य नहीं है,अपितु यह संदर्भ, भावना और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करता है. यही कारण है कि यह प्रक्रिया कई

कठिनाइयों से घिरी होती है. भाषाओं की संरचना में अंतर, सांस्कृतिक सटीकता बनाए रखना और तकनीकी शब्दों का सही अर्थ निकालना प्रमुख चुनौतियाँ हैं.

3.3 *अनुवाद का महत्व*

अनुवाद का महत्व आज अत्यधिक बढ़ चुका है और यह क्षेत्र पहले से कहीं अधिक विस्तृत हो चुका है. यह शब्द प्राचीन काल से प्रचलित रहा है, लेकिन वर्तमान में इसके अर्थ और कार्यक्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है. आज के युग में ज्ञान और विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता तेजी से बढ़ रही है. अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अनुवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इन क्षेत्रों में अनुवाद के योगदान को समझना बहुत जरूरी है.

3.3.1 *साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व*

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है. प्राचीन युग की भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों को आज के पाठक अनुवाद के माध्यम से ही समझने और सराहने में सक्षम हो पाते हैं. एक क्षेत्र विशेष की भाषा में लिखी गई रचनाएँ जब अन्य भाषाओं में अनुदित होती हैं, तो न केवल उनका प्रसार बढ़ता है बल्कि उनके रचनाकारों को भी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिलती है. जहाँ अन्य क्षेत्रों की भाषा मुख्यतः स्पष्ट और सीधी होती है, वहीं साहित्य में लेखक अपनी अभिव्यक्ति को गहराई देने के लिए शब्दों के अर्थ की विभिन्न परतों का उपयोग करता है. इस कारण साहित्य का अनुवाद करते समय विशेष सतर्कता और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है.

साहित्यिक अनुवादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि मूल रचना की भावनात्मक गहराई, सांस्कृतिक संदर्भ और कलात्मक सौंदर्य अक्षुण्ण रहे. गद्य की तुलना में काव्य का अनुवाद अधिक जटिल होता है, क्योंकि इसमें शब्दों की लय, ध्वनि और भावना को भी सटीकता से व्यक्त करना होता है. इसलिए, साहित्यिक अनुवाद केवल भाषाई कौशल ही नहीं, अपितु रचनात्मकता और संवेदनशीलता की भी माँग करता है. साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, कथानुवाद, काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद, संवादानुवाद, अन्य विधाएँ (आत्मकथा, जीवनी, डायरी, रीपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध) आदि को समाविष्ट किया जा सकता है.

3.3.2 *विधि और न्याय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व*

न्याय और कानून समाज के प्रमुख स्तंभ होते हैं, जो सामाजिक व्यवस्था को संचालित करते हैं. न्यायालयों में उपयोग की जाने वाली भाषा और उनकी अभिव्यक्तियों की प्रकृति विशिष्ट होती है, जिससे विधिक अनुवाद एक जटिल कार्य बन जाता है. विधि से जुड़े दस्तावेज़ों में अंग्रेजी के जो वाक्य प्रयोग में लाए जाते हैं, वे अक्सर जटिल और लंबे होते हैं. इन्हें सरल और स्पष्ट हिंदी में परिवर्तित करना अनुवादक की जिम्मेदारी होती है, ताकि समझने में कोई कठिनाई न हो. भारत में उच्चतम न्यायालयों और विधिक कार्यवाहियों में मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा का उपयोग होता है, जबकि

निचली अदालतों में हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएँ प्रचलित हैं. न्यायिक प्रक्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए अनुवाद आवश्यक हो जाता है.

न्यायालय की भाषा यदि जनता की भाषा होगी, तो न्याय को समझना और स्वीकार करना सरल होगा. न्याय का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब सामान्य नागरिक उसे समझ पाए. इसीलिए, विधि और न्याय की भाषा को सरल और जनसामान्य की भाषा में अनुदित करना आवश्यक है.

3.3.3 *शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व*

हमारे देश में विज्ञान और तकनीकी की शिक्षा मुख्य रूप से अंग्रेजी में दी जाती है, किन्तु अब इसमें धीरे-धीरे बदलाव देखा जा रहा है. वर्तमान समय में विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई का माध्यम हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ भी बन रही हैं. अंग्रेजी से अनुवाद कर विभिन्न विषयों की शिक्षा इन भाषाओं में उपलब्ध कराई जा रही है. इस बदलाव के कारण अंग्रेजी माध्यम की प्राथमिकता धीरे-धीरे कम हो रही है. अनुवाद के इस प्रयास ने भारतीय भाषाओं को शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान और सम्मान दिलाने का अवसर प्रदान किया है.

3.3.4 *जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व*

जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. मुख्य रूप से समाचार पत्र, रेडियो और दूरदर्शन जैसे संचार माध्यमों में अनुवाद का अत्यधिक प्रयोग होता है. आज के समय में ये माध्यम हर भाषा-क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं. अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसियाँ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित और प्रसारित समाचारों का अनुवाद कर अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराती हैं.

जनसंचार में अनुवाद एक अत्यंत प्रभावी और व्यापक क्षेत्र है. यह समाज के हर वर्ग तक सूचनाओं को पहुँचाने का कार्य करता है. रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्रों में अनुवाद की भूमिका विशिष्ट होती है. जनसंचार को मुख्यतः दो वर्गों में बांटा जा सकता है :-

(1) *प्रिंट मीडिया में अनुवाद*
(2) *इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अनुवाद*

प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र सम्मिलित होते हैं. समाचार अनुवाद को साहित्यिक अनुवाद से अलग माना जाता है, क्योंकि इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और पाठकों के अनुकूल होनी चाहिए. दूसरी ओर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो और टेलीविजन आते हैं. यहाँ विभिन्न देशों की खबरों को स्थानीय भाषाओं, जैसे हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कर प्रसारित किया जाता है.

आकाशवाणी का उदाहरण लें तो यह भारत की प्रमुख भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करती है. रोज़ाना लगभग बाईस भाषाओं में समाचार तैयार किए जाते हैं, जिनका कार्य अनुवादकों द्वारा संपन्न होता है. रेडियो और दूरदर्शन दोनों में अनुवाद की

प्रक्रिया अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह सूचना को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने का आधार है.

3.3.5 *सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद का महत्व*

सांस्कृतिक समन्वय के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है. जब किसी देश की सांस्कृतिक धरोहर को दूसरे देशों तक पहुँचाना हो, तो वह उनकी भाषा में ही समझाई जा सकती है. इस प्रक्रिया में अनुवाद एक सेतु की तरह कार्य करता है. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के दौरान अक्सर अनुवादकों की सहायता ली जाती है, जो संवाद को सरल और प्रभावी बनाते हैं.

3.3.6 *धर्म के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व*

धार्मिक क्षेत्र में भाषा की भूमिका विशेष होती है. भारत में, उदाहरण के लिए, हिन्दू धर्म से जुड़ी संस्कृत भाषा का एक विशिष्ट स्थान रहा है. लेकिन संस्कृत में लिखे गए ग्रंथों को सामान्य नागरिक तक पहुँचाने के लिए उनका अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है. श्रीमद् भगवद् गीता जैसे धर्मग्रंथों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित किया गया है ताकि सभी लोग उसके संदेश को समझ सकें. इसी प्रकार, प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद समय-समय पर किया जाता रहा है और यह प्रक्रिया आज भी जारी है.

3.3.7 *फिल्म उद्योग में अनुवाद का महत्व*

फिल्मों का अनुवाद तब होता है जब एक भाषा में बनी फिल्म को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है. यह प्रक्रिया फिल्मों को अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुँचाने में सहायक होती है. भारत में कई क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्में बनती हैं, जिन्हें हिन्दी में अनुवादित या डबिंग करके पूरे देश के सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जाता है. न केवल क्षेत्रीय बल्कि विदेशी फिल्मों को भी हिन्दी में डब कर दर्शकों के लिए उपलब्ध कराया जाता है. इस क्षेत्र में अनुवाद का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है. आजकल किसी भी सफल फिल्म को उसकी मूल भाषा से दूसरी भाषाओं में डब कर रिलीज़ करना आम बात हो गई है. इसमें केवल संवादों और भाषा का अनुवाद होता है.

3.3.8 *संसदीय व्यवस्था में अनुवाद का महत्व*

संसदीय कार्यप्रणाली में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. भारत में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, परन्तु अभी हिंदी पूर्ण रूप से राजभाषा के रूप में लागू नहीं हो पाई है. संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले अनेक विधेयक और दस्तावेज अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं, जिन्हें बाद में हिन्दी में अनुवाद कर पेश किया जाता है. संसद में वक्ता अंग्रेजी भाषा का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन उनके भाषणों का अनुवाद हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में करके जनता के समक्ष रखा जाता है. अनुवाद प्रक्रिया से यह सुनिश्चित होता है कि सभी भाषाओं के बोलने वाले नागरिक संसदीय कार्यों को समझ सकें.

3.3.9 *विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्व*

विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्व अत्यधिक बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह एक ऐसा माध्यम है जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री को एक भाषा से दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उसकी मौलिक जानकारी और तथ्यों में कोई परिवर्तन न हो. जहाँ साहित्यिक अनुवाद में भावनाओं और अभिव्यक्ति का ध्यान रखा जाता है, वहीं वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद में तर्क और विचारों की सटीकता को प्राथमिकता दी जाती है.

विज्ञान की प्रकृति सार्वभौमिक होती है और इसकी सीमाएँ भाषा की बाधाओं से परे होती हैं. छात्रों को शोध, अध्ययन और आविष्कारों के बारे में जानने के लिए अक्सर विदेशी भाषाएँ सीखनी पड़ती हैं. वे इन विदेशी स्रोतों को अपनी मातृभाषा में अनुदित कर वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान प्राप्त करते हैं. आधुनिक युग में नई उपलब्धियों और वैश्विक प्रगति को समझने के लिए अनुवाद आवश्यक उपकरण बन गया है. जैसे-जैसे विज्ञान का महत्व बढ़ रहा है, वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद की माँग भी तेजी से बढ़ रही है.

इस प्रकार के अनुवाद में विषयवस्तु और जानकारी का विशेष महत्व होता है, जबकि भाषा की सजावट गौण मानी जाती है. यहाँ मुख्य उद्देश्य तथ्य, अवधारणाएँ और सूचनाएँ स्पष्ट और सरल तरीके से प्रस्तुत करना है. इसलिए, एक कुशल अनुवादक के लिए विषय का गहन ज्ञान और तकनीकी दक्षता अनिवार्य होती है.

वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं :-

(1) *वस्तुनिष्ठता*

(2) *तथ्यपरकता*

(3) *सरलता*

(4) *स्पष्टता*

(5) *जानकारी से भरपूर होना*

(6) *व्यक्तिगत दृष्टिकोण से मुक्त होना*

(7) *अलंकारों से रहित होना*

(8) *संदेह रहित प्रस्तुति*

(9) *पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग*

इस क्षेत्र में सफल अनुवाद के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित अनुवादकों की आवश्यकता होती है, जो विज्ञान और तकनीकी विषयों में दक्ष हों.

3.3.10 प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

प्रशासनिक अनुवाद का क्षेत्र साहित्यिक, वैज्ञानिक या तकनीकी अनुवादों की तरह विश्वव्यापी नहीं है. यह मुख्य रूप से भारत की प्रशासनिक प्रणाली, कार्यालयों, बैंकों और सरकारी संस्थानों से जुड़े कार्यों से संबंधित है. इसमें मुख्य रूप से अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता है. भारत में प्रशासनिक अनुवाद की आवश्यकता इसलिए बढ़ी है क्योंकि हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है और अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में अपनाया गया है. प्रशासनिक भाषा सीधी और स्पष्ट होती है, इसलिए इसका अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता है. अनुवाद के दौरान इस बात का ध्यान रखना बेहद जरूरी है कि प्रशासनिक भाषा में लिखे गए वाक्य एक ही अर्थ व्यक्त करें.

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि अनुवाद का महत्व दिन-प्रतिदिन हर क्षेत्र में बढ़ रहा है. आधुनिक समय में ज्ञान और विज्ञान के लगभग सभी क्षेत्रों में अनुवाद आवश्यक हो गया है और यह अब हर क्षेत्र का अभिन्न अंग बन चुका है.

- बोध प्रश्न
  - निम्नलिखित प्रश्न के विस्तृत उत्तर दीजिए.

(1) गद्य की तुलना में काव्य का अनुवाद जटिल क्यों है?

(2) जनसंचार को मुख्यतः किन दो वर्गों में बांटा जा सकता है?

(3) भारत में उच्चतम न्यायालयों और विधिक कार्यवाहियों में मुख्य रूप से किस भाषा का उपयोग होता है?

(4) शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्व है?

(5) सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद की आवश्यकता क्यों है?

3.4 अनुवाद की चुनौतियाँ

अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो अक्सर उतना सरल नहीं होता जितना पहली नजर में लगता है. अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं, जिनसे निपटना अनुवादक के लिए आवश्यक हो जाता है. एक कुशल अनुवादक इन बाधाओं को पहचानकर उन्हें सुलझाने का प्रयास करता है. अनुवाद करते समय कई दिक्कतें उभरती हैं, लेकिन इनका समाधान निकालने की क्षमता ही अनुवादक की दक्षता को दर्शाती है.

3.4.1 व्याकरण से जुड़ी समस्याएँ

अनुवाद प्रक्रिया में व्याकरण से संबंधित कठिनाइयाँ मुख्य हैं. हर भाषा की अपनी विशेष व्याकरणिक संरचना होती है, जो उसे नियंत्रित करती है. इसलिए, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के व्याकरण का समुचित ज्ञान अनुवादक के लिए बेहद महत्वपूर्ण है. इन भाषाओं के व्याकरणिक नियम, जैसे वाक्य विन्यास, क्रिया रूप,

वचन और लिंग निर्धारण, आपस में भिन्न हो सकते हैं. अनुवाद करते समय इन विविधताओं को समझकर और ध्यान में रखकर कार्य करना आवश्यक है.

3.4.2 *शब्द चयन की समस्याएँ*

किसी भी भाषा में एक शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं, जो संदर्भ पर निर्भर करते हैं. अनुवाद करते समय यह बेहद ज़रूरी है कि शब्द का चयन सावधानीपूर्वक और उचित संदर्भ के अनुरूप किया जाए. यदि अनुवादक विषय को पूरी तरह समझे बिना सीधे शब्दकोश में दिए गए किसी भी अर्थ को चुन लेता है, तो अनुवाद की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है. केवल एक गलत शब्द के चयन से पूरे पाठ का उद्देश्य बदल सकता है. इस कारण, शब्द चयन में अनुवादक को अत्यंत सतर्क और जिम्मेदार होना चाहिए.

3.4.3 *मुहावरे और लोकोक्ति से जुड़ी समस्याएँ*

किसी भी भाषा के मुहावरे और कहावतें उस भाषा की सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विशिष्टताओं को दर्शाती हैं. इन्हें सही तरीके से समझने और अनुदित करने के लिए उस क्षेत्र की परंपराओं और संदर्भों की जानकारी होना आवश्यक है. केवल शब्दों के आधार पर इनके अर्थ को नहीं समझा जा सकता, क्योंकि उनका वास्तविक अर्थ संदर्भ और उपयोग पर निर्भर करता है. यदि स्रोत भाषा के मुहावरे का समानार्थी मुहावरा लक्ष्य भाषा में मिल जाए, तो अनुवाद अधिक प्रभावी और रोचक हो जाता है. उदाहरण के लिए, नीचे कुछ गुजराती मुहावरे और उनके समकक्ष हिंदी मुहावरे दिए गए हैं :-

(क) लीला भेगु सूकुं बड़े - गेहूँ के साथ घुन का पिसना.
(ख) धरम करता धाड़ पड़ी - होम करते हाथ जलना.
(ग) उज्जड़ गाममां एरंडो प्रधान - अंधों में काना राजा.
(घ) रांडया पछीनुं डहापण नकामुं - अब पछताए क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत.

3.4.4 *सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी समस्याएँ*

प्रत्येक भाषा किसी विशेष क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और जीवनशैली से जुड़ी होती है. इस संस्कृति के अनुरूप कुछ पारंपरिक, धार्मिक या सांस्कृतिक शब्द होते हैं, जिनका अर्थ उस विशेष क्षेत्र के लोग ही पूरी तरह से समझ सकते हैं. भारतीय संदर्भ में कुछ शब्द जैसे सती, जौहर, केसरिया, कढ़ी, हुक्का, होली, दीपावली, माधस्नान, रामराज्य, यमराज आदि ऐसे होते हैं, जिनका अन्य भाषाओं में शाब्दिक रूप से अनुवाद नहीं किया जा सकता. इन शब्दों को उसी रूप में रखा जाता है, जैसे वे स्रोतभाषा में होते हैं, अन्यथा उनका विशेष अर्थ खो जाता है. जब ऐसे शब्दों का प्रयोग लक्ष्यभाषा में किया जाता है, तो उन्हें कोष्ठक में या पादटिप्पणी में समझाया जाता है, ताकि स्रोतभाषा के सांस्कृतिक संदर्भ को सही तरीके से प्रस्तुत किया जा सके.

उदाहरण स्वरूप, यदि 'सती' शब्द का उपयोग किया जाए तो इसे इस तरह समझाया जा सकता है: - "जब पत्नी अपने पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता में आग लगाकर आत्मदाह कर लेती है, तो इसे सती कहा जाता है." यह तरीका शब्द के सही अर्थ को स्पष्ट करता है. हालाँकि, जब अनुवादक को स्रोतभाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान नहीं होता है, तो यह कार्य मुश्किल हो सकता है, अनुवादक के लिए यह एक बड़ी समस्या बन जाती है. यदि हम गुजराती गीत को अंग्रेजी में अनुदित करना चाहें तो यह कार्य बेहद कठिन हो जाता है, उदाहरण के रूप में,

''गौरमा ने पांचे आंगलिए पूज्या ने नागला ओछा पडया रे लोल...
कमखे दोथो भरीने काई टांकया ने आभला ओछा पडया रे लोल...''

यह गीत हिन्दू संस्कृति और गुजरात के आँचलिक परिवेश को दर्शाता है. अत: इसका अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद करना कठिन, एक तरह से असंभव ही लगता है.

3.4.5 *शब्द-शक्तियों के प्रयोग की समस्या*

जहाँ लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्ति प्रयुक्त हो तथा जहाँ व्यंग्य किया गया हो, वहाँ शब्दों का सीधा-सरल अर्थ ग्रहण नहीं किया जा सकता है. यदि अनुवादक इन्हें समझे बिना ही शब्दों के अर्थों को ध्यान में रखकर अनुवाद कर दें तो बड़ी दुविधा हो जाएगी. किसी भी बात के व्यंग्यार्थ को समझे बिना उसका तात्पर्य हम नहीं समझ सकते. जैसे यदि किसी को कहा जाए - "आप तो वैशाखनंदन हैं.", तो पहली नजर में यह प्रशंसा प्रतीत हो सकती है, लेकिन जब इसके वास्तविक अर्थ पर ध्यान दिया जाएगा, तो यह समझ में आएगा कि वैशाखनंदन का मतलब 'गधा' है. अत: इसका सही अर्थ होगा, "आप तो गधे हैं."

इसलिए अनुवादक को शब्दों के छिपे हुए अर्थों और व्यंग्य को ठीक से समझने की आवश्यकता होती है. तभी वह सही और सटीक अनुवाद कर सकेगा.

3.4.6 *साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या*

साहित्यिक अनुवाद में उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि का अनुवाद शामिल होता है. यह कार्य पहली नजर में सरल लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह उतना आसान नहीं है. प्रत्येक लेखक या कवि के विचार और भावनाएँ उनके लेखन में निहित होती हैं, जिन्हें अनुवादक को समझकर, उसी भावनात्मक रूप में अन्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है. विशेष रूप से कविता का अनुवाद, जहाँ अलंकार, छंद और शब्द शक्ति का व्यापक प्रयोग होता है, एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है.

उदाहरण के तौर पर, गोल्डस्मिथ के `The Deserted Village' *का श्रीधर पाठक द्वारा ब्रज में किया गया अनुवाद 'उजाड़ ग्राम' देखें. पाठक जी ने इसे रोला छंद में प्रस्तुत किया :-*

Sweet Auburn Loveliest village of the plain,

Where Health and plenty cheered the labouring swain.

हे प्यारे ओबर्न सकल गामन सौ रूरे.

जहाँ श्रमी कृषिकार बसें सुख संपत्ति पूरे.

Where smiling spring its earliest visit paid,

And parting summer's lingering blooms delayed

जहाँ रसीली ऋतु वसंत पहले ही आवत.

जात समय बिलमाय फूल फल देर लगावत.

यह अनुवाद ब्रज भाषा में किया गया है. साहित्यिक अनुवाद पर चर्चा करते समय, अधिकांशतः कविता का अनुवाद प्रमुख रूप से ध्यान में आता है, लेकिन गद्य रचनाओं का अनुवाद भी अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ और समस्याएँ प्रस्तुत करता है. यह धारणा गलत होगी कि उपन्यास या कहानी का अनुवाद अपेक्षाकृत सरल है. साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जो वास्तविकता को दर्शाती हैं.

3.4.7 *पौराणिक प्रतीकों के अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ*

अनुवाद के दौरान एक महत्वपूर्ण चुनौती पौराणिक प्रतीकों, कथाओं और उनके संदर्भों को व्यक्त करने की होती है. उदाहरण स्वरूप, भीष्म प्रतिज्ञा, नारद विधा, विभीषण, कुंभकर्ण, मंथरा, जयचंद आदि जैसे शब्दों का अर्थ और उनके भीतर छिपी प्रतीकात्मकता को सही रूप से अनुदित करना मुश्किल हो सकता है. हालाँकि, यदि लक्ष्य भाषा में ऐसे प्रतीकों से संबंधित कोई अन्य पात्र या संज्ञा हो, तो उसे अपनाया जा सकता है. अन्यथा, इन शब्दों का विश्लेषण करके प्रतीकों की व्याख्या करने से अनुवाद को स्पष्ट और सटीक बनाया जा सकता है.

3.4.8 *विज्ञापन के अनुवाद की समस्या*

विज्ञापनों का अनुवाद करते समय भी अनुवादकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है. अक्सर, विज्ञापनों का अनुवाद केवल शब्दों से नहीं, अपितु विचारों और भावनाओं के अनुवाद से होता है. सही पर्यायवाची शब्द का चयन करना और आकर्षक व प्रभावी रूप से उन्हें प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती होती है. यह विडंबना है कि अंग्रेजी में विज्ञापन लिखने वाले रचनाकारों को बहुत अधिक पारिश्रमिक मिलता है, जबकि उनका अनुवाद करने वालों को कम मेहनताना मिलता है, क्योंकि अनुवाद में शब्दों की संख्या कम होती है. असल में, सीमित शब्दों में विचारों का सही रूप में अनुवाद करना सबसे कठिन कार्य है, चाहे वह शीर्षक का अनुवाद हो या किसी विज्ञापन का. विज्ञापन के अनुवाद में सटीकता, सरलता और आकर्षक शब्दों का प्रयोग जरूरी होता है, ताकि वह लक्षित दर्शकों पर प्रभाव डाल

सके. इस प्रकार, अनुवादक को इन सभी पहलुओं का ध्यान रखते हुए गुणवत्तापूर्ण अनुवाद करना होता है.

- *बोध प्रश्न*

  - *निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक वाक्य में दीजिए.*

(1) *'आप तो वैशाखनंदन हैं' का अर्थ क्या है?*

(2) *गोल्डस्मिथ की* 'The Deserted Village' *का अनुवाद किसने किया?*

(3) \`The Deserted Village' *का ब्रज भाषा में अनुवाद किस नाम से हुआ?*

(4) *पौराणिक प्रतीकों के अनुवाद में क्या सावधानी रखनी पड़ती है?*

(5) *'लीला भेगु सूकुं बड़े' मुहावरे का हिन्दी अनुवाद क्या होगा?*

3.5 *सारबिंदु*

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी. अब आप इकाई के प्रत्येक उपशीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए, जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी. हम भी यहाँ यही काम करने जा रहे हैं. आप अपनी सूची से इस सूची का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- *इस इकाई को पढ़कर हमने अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की.*
- *विविध क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व को जाना.*
- *अनुवाद कार्य करने में कौन-कौन सी चुनौतियाँ आ सकती हैं उसके बारे में विस्तार से चर्चा की.*
- *धर्म, साहित्य, शिक्षा, न्याय आदि क्षेत्रों में अनुवाद की क्या आवश्यकता है और उन क्षेत्रों में अनुवाद का क्या महत्व है उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की.*
- *अनुवाद का कार्यक्षेत्र कितना विस्तृत है उसके बारे में जाना.*
- *वर्तमान में अनुवाद की कितनी आवश्यकता है उसके बारे में जाना.*

3.6 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- *बोध प्रश्न*

  - *निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिऐ.*

(1) *अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक समझाइए.*

(2) *अनुवाद कार्य में आने वाली चुनौतियों पर सविस्तार चर्चा कीजिए.*

(3) *अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में चर्चा कीजिए.*

- *टिप्पणी लिखिए.*

(1) *साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद*

(2) *धर्म के क्षेत्र में अनुवाद*

(3) *साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या*

(4) *फिल्म उद्योग और अनुवाद*

(5) *मुहावरे और लोकोक्ति से जुड़ी समस्याएँ*

- *एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए.*

(1) *साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत किन-किन प्रकारों का समावेश होता हैं?*

(2) *जनसंचार को मुख्यतः कौन से दो वर्गों में बाँटा जाता है?*

(3) *वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं?*

(4) *'धरम करता धाड़ पड़ी' मुहावरे के लिए हिन्दी में कौनसा मुहावरा प्रयुक्त हो सकता है?*

(5) *'अंधों में काना राजा' के लिए गुजराती में कौन सा मुहावरा है?*

3.7 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मी कांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी*
- *अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी*
- *अनुवाद की सामाजिक भूमिका, डॉ. रीतारानी पालीवाल*
- *अनुवाद और अनुप्रयोग, डॉ. दिनेश चमौला 'शैलेश'*

इकाई 4 अनुवाद प्रक्रिया

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 अनुवाद की प्रक्रिया

4.4 अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

4.5 हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका

4.6 सारबिंदु

4.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

4.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

4.1 उद्देश्य

यह इकाई 'अनुवाद प्रक्रिया' से सम्बन्धित है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- आप अनुवाद की प्रक्रिया तथा उसके स्वरूप को समझ सकेंगे.
- आप अनुवाद के पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन की आवश्यकताओं को समझ सकेंगे.
- आप हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका को जान सकेंगे.
- आप अच्छे अनुवादक बनकर अनुवाद के क्षेत्र में अपना योगदान देकर भारतीय भाषा, साहित्य की संस्कृति का संवर्धन कर सकेंगे.

4.2 प्रस्तावना

इस इकाई में आप अनुवाद की प्रक्रिया को समझेंगे. केवल एक भाषा के शब्द के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्द रख देना ही अनुवाद नहीं होता. अनुवादक को किसी एक भाषा में कही गयी बात को किसी दूसरी भाषा में उसी प्रभाव और अर्थव्याप्ति के साथ कहने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया से गुजरना होता है. इसी प्रक्रिया को बताने का प्रयास इस इकाई में किया जा रहा है. साथ ही इस इकाई में अनुवाद के पुनरीक्षण और मूल्यांकन के बिंदुओं को भी स्पष्ट किया जाएगा.

4.3 अनुवाद की प्रक्रिया

'अनुवाद' शब्द सुनने में जितना सरल व सहज प्रतीत होता है पर व्यवहार में यह उतना ही जटिल एवं श्रमसाध्य कार्य है. अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में

पहुँचने तक एक लंबी प्रक्रिया से गुजरता है. अनुवाद के सन्दर्भ में अनुवाद प्रक्रिया सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है. अनुवाद कार्य के आरंभ बिंदु से लेकर अंतिम बिंदु तक अर्थात् कार्यारंभ से लेकर कार्य के समापन तक की प्रक्रिया अनुवाद प्रक्रिया कहलाती है. इसमें अनुवादक द्वारा मूल सामग्री के पढ़े जाने से लेकर अनुवाद बनकर पूरी तरह तैयार होने तक के सारे सोपान शामिल हैं. अनुवाद प्रक्रिया अधिकांश रूप से अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष के अंतर्गत गिनी जाती है. यह एक ऐसा पक्ष है जिसे सभी विद्वान अतिमहत्वपूर्ण मानते हैं.

अनुवाद की प्रक्रिया के सन्दर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने अपने मत रखे हैं. जिनमें भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों ही विद्वान शामिल है. मगर नाइडा द्वारा समझाए गए अनुवाद प्रक्रिया के निम्नलिखित तीन चरण अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत सरल व सार्थक लगते हैं. अत: इन्हीं के तीन चरणों को ध्यान में रखते हुए हम अनुवाद की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करेंगे.

4.3.1 *विश्लेषण*

स्रोतभाषा में रचित पाठ में निहित संदेश सर्वाधिक महत्व रखता है. इसमें अनुवादक को व्याकरण और शब्दार्थ का विश्लेषण करना होता है. इनमें से व्याकरणिक विश्लेषण का तात्पर्य केवल वाक्य, उपवाक्य, पद, पदबंध के गठनात्मक विश्लेषण से नहीं, बल्कि व्याकरणिक गठन में स्थित अर्थ सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु है. विश्लेषण करते समय व्याकरण के साथ अर्थ पर ध्यान देने की भी आवश्यकता होती है. जहाँ एक से ज्यादा अर्थ निकलने की संभावना हो वहाँ तो और भी सावधानी से विश्लेषण की जरूरत रहती है. अर्थ का विश्लेषण करते समय अर्थ के तीनों गुण वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ पर विशेष ध्यान देना पड़ता है.

4.3.2 *संक्रमण*

इस सोपान को अंतरण भी कहा जाता है. पाठ विश्लेषण से हुए अर्थबोधन को लक्ष्य भाषा में ढाल देना अनुवाद प्रक्रिया का दूसरा चरण होता है जो संक्रमण या अंतरण कहलाता है. अभिव्यक्ति के स्तर पर यह संदेश का पुनर्विन्यास होता है. यह अनुवाद प्रक्रिया का केन्द्रबिंदु है, मध्यबिंदु है. उसे अपने कौशल का प्रयोग कर विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों के लिए अनुवाद विकल्प ढूँढ़ने होते हैं. यह किसी भी अनुवादक के लिए परीक्षा का क्षण होता है. पाठ विश्लेषण से हुए अर्थबोधन के लिए लक्ष्यभाषा में योग्य विकल्प की खोज साधारण कार्य नहीं है. यह इस पर निर्भर करता है कि दोनों भाषाओं की जानकारी में अनुवादक की योग्यता कितनी है. यहाँ यह भी समझना है कि केवल दो भाषा का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, प्रतिभा और कल्पनाशक्ति का अंतर्भाव भी अनिवार्य है. मुहावरे, कहावतें, अनेकार्थता, कथन भंगिमा आदि बातें ऐसी हैं जिनके अंतरण में विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है.

4.3.3 *पुनर्गठन*

इसी सोपान के अंतर्गत अनुवाद मूर्तिमंत साकार रूप धारण कर लेता है. विश्लेषण के माध्यम से अनुवादक अर्थबोध कर लेता है, संक्रमण के माध्यम से उस अर्थ को लक्ष्यभाषा में कैसे प्रस्तुत किया जाए यह सोच लेता है और अंतिम सोपान 'पुनर्गठन' के अंतर्गत वह लक्ष्यभाषागत स्वाभाविकता के साथ कथ्य की अभिव्यक्ति कर देता है. पुनर्गठन का चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी चरण में प्रत्यक्ष रूप से अनुवाद हो रहा होता है. अनुवाद करते समय अनुवादक को कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए. उसे व्याकरणिक संरचना, शब्दक्रम, भाषाभेद, सहप्रयोग और शैलीगत प्रतिमानों का ध्यान रखना ही चाहिए क्योंकि इनके अभाव में अनुवाद में लक्ष्यभाषागत स्वाभाविकता आ ही नहीं सकती.

स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा की प्रकृति समान नहीं होती, कभी-कभी अनुवादक इस मूल प्रकृति को समझ नहीं पाते और कभी-कभी गलत अनुवाद हो जाता है. अतः अनुवादक को चाहिए कि वह स्रोतभाषा के प्रत्येक पद, पदबंध के लिए लक्ष्यभाषा में उसी कोटि के पद, पदबंध का चुनाव सावधानी से करे.

अनुवाद करते समय अनुवादक कर्तृवाच्य संरचना को कर्मवाच्य संरचना में और कर्मवाच्य संरचना को कर्तृवाच्य संरचना में बदल सकता है. पुनर्गठन के स्तर पर अनुवादक को सहप्रयोगों को यथावत न रखकर लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार रखना होता है.

नाइडा के अलावा अन्य विद्वानों में न्यूमार्क का अनुवाद-प्रक्रिया को लेकर चिंतन भी विशेष महत्व रखता है. उन्होंने मुख्य चार सोपान बताए हैं. (1) मूलभाषा पाठ (2) बोधन और व्याख्या (3) अभिव्यक्ति और पुनःसर्जन (4) लक्ष्यभाषा पाठ.

एक अन्य विद्वान बाथगेट ने अपने प्रारूप को 'संक्रियात्मक प्रारूप' कहा है. उन्होंने कुल सात चरण माने हैं. (1) समन्वयन (2) विश्लेषण (3) बोधन (4) पारिभाषिक अभिव्यक्ति (5) पुनर्गठन (6) पुनरीक्षण (7) पर्यालोचन. इसमें से अधिकांश संकल्पनाओं का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था लेकिन बाथगेट ने इन्हें स्वतंत्र रूप में देखा है. न सिर्फ देखा है बल्कि इन के स्वतंत्र होने का प्रमाण भी प्रस्तुत किया है.

भारतीय विद्वानों में डॉ. सुरेश कुमार ने भी इसकी प्रक्रिया की कुछ स्थितियाँ बताई है. (1) अनुवाद पूर्व स्थिति (2) अनुवाद कार्य की स्थिति (3) अनुवादोत्तर स्थिति. डॉ. सुरेश कुमार कहते हैं कि मूल भाषा पाठ के अनुवादकीय बोध से निष्पन्न वैचारिक संरचना ही लक्ष्यभाषा पाठ का रूप धारण कर लेती है. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी अनुवाद की प्रक्रिया को दो भाषाओं में स्थित संप्रेषण व्यापार से संबंधित मानते हैं. इन्होंने अनुवाद-प्रक्रिया के तीन चरण माने हैं. - (1) मूलपाठ के पाठक की भूमिका और अर्थग्रहण की प्रक्रिया (2) द्विभाषिक की भूमिका और अर्थांतरण की प्रक्रिया (3) अनुदित पाठ के रचयिता की भूमिका और सम्प्रेषण की प्रक्रिया. इसमें अर्थग्रहण अर्थांतरण और सम्प्रेषण की प्रक्रिया.

- *बोधप्रश्न*
  - *निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए.*

(1) *'स्रोतभाषा' से आप क्या समझते है?*

(2) *मैंने गुजराती नवलकथा 'मानवी नी भवाई' का हिन्दी में अनुवाद किया इस वाक्य में लक्ष्य भाषा कौन सी हुई?*

(3) *पुनर्गठन का क्या अर्थ है?*

(4) *किसी एक पाश्चात्य विद्वान का नाम बताइए जिन्होंने अनुवाद प्रक्रिया को समझाया हो.*

(5) *डॉ. सुरेश कुमार ने अनुवाद प्रक्रिया की कितनी स्थितियाँ मानी हैं?*

4.4 *अनुवाद परीक्षण एवं मूल्यांकन*

अनुवाद-कार्य का परीक्षण-समीक्षण-मूल्यांकन अनुवाद के सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है. अनुवाद कार्य के गुण-दोष, सफलता असफलता को जाँचने के लिए अनुवाद का मूल्यांकन किया जाता है. यह मूल्यांकन परीक्षण और समीक्षण के बिना अधूरा रह जाएगा. अत: हम कह सकते हैं कि अनुवाद-कार्य की सफलता असफलता को जाँचने की प्रक्रिया परीक्षण-समीक्षण-मूल्यांकन जैसे सोपानों से होकर गुजरती है.

4.4.1 *अनुवाद परीक्षण*

अनुवाद करना अपने आप में एक कठिन कार्य है. अनुवादक द्वारा किए गए अनुवाद का परीक्षण करना भी उतना ही कठिन कार्य है. जिस प्रकार कोई भी अनुवादक नहीं बन सकता, उसी प्रकार कोई भी परीक्षक भी नहीं बन सकता. परीक्षण के द्वारा ही यह जाना जा सकता है कि अनुवादक अपने नियत बिंदुओं को कैसे और कितना पा सका है.

अनुवाद परीक्षण की दो विधियाँ हैं (1) प्रभाववादी परीक्षण (2) व्यवहारवादी परीक्षण. प्रभाववादी परीक्षण में परीक्षक के लिए केवल उसकी अपनी प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण होती है. परीक्षण करते समय वह अपनी प्रतिक्रिया तथा अपने विचारों को भूलता नहीं है. जबकि व्यवहारवादी परीक्षण में परीक्षक स्वयं की नहीं बल्कि दूसरों की अन्य संभावित पाठकों की प्रतिक्रिया को अहमियत देता है.

उपर्युक्त इन दो विधियों के अलावा पुनर्नुवाद, निष्पादन परीक्षण, क्लोज तकनीक, अनुक्रिया परीक्षण, प्रतिपाद्य की व्याख्या, वाचन परीक्षण आदि विधियाँ भी काम में ली जा सकती हैं.

4.4.2 *अनुवाद समीक्षा*

अनुवाद समीक्षा का सीधा तात्पर्य मूल पाठ की तुलना में अनुदित पाठ के गुण-दोष का विवेचन है. इसके अन्तर्गत मूल पाठ की तुलना में अनूदित पाठ कितना

योग्य या अयोग्य है, यह देखा जाता है. समीक्षण अनुवाद के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है.

4.4.3 *अनुवाद मूल्यांकन*

प्रसिद्ध अनुवाद सिद्धान्त लेखक डॉ. सुरेश कुमार कहते हैं कि दो सममूल्य पाटों के बीच समानता के इकतरफा संबंध को अनुवाद कहा जाता है. ठीक इसी तरह वो सममूल्य पाठों की विश्लेषणात्मक तुलना की जाती है और फिर जो निष्कर्ष निकाला जाता है, उसे मूल्यांकन कहते हैं.

4.5 *हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका*

अनुवाद के संबंध में सन् 1960 *ई. में राष्ट्रपति ने एक आदेश पारित किया जो राजभाषा से संबंधित है. राष्ट्रपति के इस आदेश में कहा गया है कि सभी प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद किया जाए तथा उसमें एकरूपता हो. अनुवाद साहित्य की एक विशिष्ट विद्या है इसके द्वारा हम किसी कृति को अन्य-भाषा-भाषी समुदाय तक पहुँचाते हैं, वहीं दूसरी ओर हम सृजन का सुख भी प्राप्त करते हैं. अत: अनुवाद साहित्य की समृद्धि तथा सृजन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण काम करता है. सन्* 1867 *ई. में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया. यह अधिनियम अनुवाद के संदर्भ में है. इस अधिनियम में हिंदी-अंग्रेजी प्राधिकृत अनुवाद पर बल दिया गया. इस धारा में स्पष्ट किया गया है कि संसद, केंद्रीय सरकार के अधीन सभी मंत्रालयों, कार्यालयों के संकल्पों, साधारण आवेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रतिवेदनों, प्रेस विज्ञप्तियों, अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापनों, सूचनाओं, निविदा प्रारूपों तथा निस्वादित संविधाओं और करारों के लिए अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं का प्रयोग होता है.*

हिंदी भाषा को राजभाषा की स्वीकृति मिलने के बाद संविधान के भाग 5 *एवं भाग* 7 *में हिंदी संबंधी विभिन्न प्रावधानों के लिए संविधान द्वारा की गई व्यवस्था के कारण अनुवाद के बिना सरकारी काम चलना कठिन हो गया था. इसलिए केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों इत्यादि में हिंदी अधिकारी, सहायक निर्देशक, उप-निर्देशक, निर्देशक जैसे उच्चस्तर के अधिकारियों की नियुक्ति की गई साथ ही हिंदी अधिकारी व हिंदी अनुवादकों की अनेक नियुक्तियाँ की गई. शिक्षा तथा व्यापार में तो इसका महत्व व उपयोगिता अनिवार्य है.*

4.6 *सारबिंदु*

अध्येता मित्रो! अनुवाद प्रक्रिया सम्बन्धी उपर्युक्त सारे मुद्दों का अभ्यास करने के बाद आप अब 'अनुवाद प्रक्रिया' को अच्छी तरह से जान गए होंगे.

- *अब आप इस बात की व्याख्या कर सकते हैं कि अनुवाद ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक भाषा की बात दूसरी भाषा में कही जाती है, लेकिन इसमें भाषा का बदलाव होता है, विचार और भाव वही रहता है.*

- *अनुवाद करते समय अनुवादक दो प्रक्रियाओं से गुजरता है. यह दो प्रक्रिया अर्थग्रहण और सम्प्रेषण की है. आपने जाना कि 'स्रोत भाषा' और 'लक्ष्य भाषा' क्या होती है.*
- *अनुवादक क्रमशः विश्लेषण, संक्रमण एवं पुनर्गठन की प्रक्रिया से गुजरता है.*

4.7 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- *बोधप्रश्न*
  - *निम्नांकित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए.*

(1) *नाइडा द्वारा बताई गई अनुवाद प्रक्रिया को समझाइए.*

- *निम्न में से सही को चुनिए*

(1) *अनुवाद का महत्व दिन प्रतिदिन*

(अ) *कम होता जा रहा है.*
(ब) *घटता-बढ़ता जा रहा है.*
(स) *बढ़ता जा रहा है.*
(द) *कहा नहीं जा सकता.*

(2) *अनुवाद के द्वारा अन्य देशों से*

(अ) *अनुसंधानकार्य प्राप्त होते हैं.*
(ब) *अनुकूल स्थिति बनती है.*
(स) *आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं.*
(द) *पारिवारिक संवेदनाएँ मिलती है.*

(3) *अनुवाद नए और प्राचीन के बीच*

(अ) *भेद करता है.*
(ब) *कड़ी स्थापित करता है.*
(स) *वैमनस्य बढ़ाता है.*
(द) *सौहार्द बढ़ाता है.*

(4) *अनुवाद से व्यापारिक क्षेत्र में......*

(अ) *कटौती आती है.*
(ब) *बढ़ोतरी नहीं होती है.*
(स) *आदान-प्रदान होता है.*
(द) *गड़बड़ होती है.*

(5) *प्रतिवर्ष पुरस्कृत रचनाओं का अनुवाद करवाता है.*

(अ) *साहित्यसेतु*

(ब) *भारतीय ज्ञानपीठ*

(स) *यूनेस्को*

(द) *कला संस्थान*

उत्तर : 1 -*(स),* 2 -*(अ),* 3 -*(च),* 4 -*(स),* 5 -*(स)*

- *निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए.*

  (1) *अनुवाद मूल्यांकन के कितने पक्ष होते हैं?*

  (2) *अनुवाद समीक्षा में किस का विवेचन होता है?*

  (3) *अनुवाद में 'परीक्षण' का अर्थ क्या होता है?*

  (4) *अनुवाद परीक्षण की दो विधियों को बताइए.*

  (5) *अनुवाद संबंधित आदेश कब पारित हुआ?*

4.8 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *अनुवाद निरुपण, डॉ. भारती गोरे, विकास प्रकाशन-कानपुर*
- *प्रयोजनमूलक हिन्दी अधुनातन आयाम, डॉ. अम्बादास देशमुख*
- *अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं ओम प्रकाश, शब्दाकार प्रकाशन, दिल्ली.*
- *अनुवाद सिद्धान्त एवं स्वरूप, डॉ. मनोहर सराफ, डॉ. शिवाकान्त गोस्वामी*
- *मीडिया कालीन हिन्दी स्वरुप और संभावनाएँ, डॉ. अर्जुन चव्हाण*

इकाई 5 अनुवाद की शैलियाँ

रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 अनुवाद की शैलियाँ

5.4 सारबिंदु

5.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

5.6 उपयोगी पाठ्यसामग्री

5.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! इस पाठ्यक्रम में आप 'अनुवाद' के सैद्धांतिक पक्ष को समझ रहे हैं. इस क्रम में इस इकाई को पढ़ने के बाद आप अनुवाद की विभिन्न शैलियों से परिचित हो पाएँगे और उनके आपसी अंतर को समझ पाएँगे.

5.2 प्रस्तावना

अनुवाद की आवश्यकता विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उत्पन्न होती है, जिसके कारण अनुवाद की अलग-अलग शैलियाँ बनती हैं. इस इकाई में आप इन शैलियों का परिचय प्राप्त करेंगे, जिससे आगे अनुवाद कार्य करते समय आप सही शैली का चुनाव कर पाएँ.

5.3 अनुवाद की शैलियाँ

अनुवाद एक जटिल और सूक्ष्म प्रक्रिया है, जिसमें मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते समय उसके अर्थ, लहजे और संदर्भ को संतुलित करना आवश्यक होता है. अनुवाद शैलियाँ इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए अनुवादकों द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों और रणनीतियों को संदर्भित करती हैं. ये शैलियाँ अनुवाद के उद्देश्य, पाठ की प्रकृति और पाठकों की अपेक्षाओं के आधार पर भिन्न होती हैं.
यहाँ प्राथमिक अनुवाद शैलियों का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है :-

1. शाब्दिक अनुवाद (शब्द-दर-शब्द अनुवाद)

'शाब्दिक अनुवाद' अनुवाद का सबसे सीधा रूप है जहाँ अनुवादक प्रत्येक शब्द या वाक्यांश का सीधे अनुवाद करके मूल अर्थ बताने का प्रयास करता है. यह विधि स्रोत पाठ में इस्तेमाल किए गए सटीक शब्दों पर जोर देती है, जिससे मूल और अनुदित पाठ के बीच घनिष्ठ अनुरूपता बनती है.

इसका प्रयोग प्रायः तकनीकी या कानूनी दस्तावेजों में किया जाता है, जहाँ परिशुद्धता और शुद्धता महत्वपूर्ण होती है. इसके साथ ही भाषा सीखने में, व्याकरण और शब्दावली को समझने में भी यह शैली उपयोगी होती है.

- लाभ
  - मूल की सटीक संरचना और शब्दावली को संरक्षित रखता है.
  - वैज्ञानिक या तथ्यात्मक सामग्री के लिए उपयोगी.
- नुकसान
  - लक्ष्य भाषा में यह अस्वाभाविक लग सकता है.
  - मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ और सांस्कृतिक बारीकियाँ खो सकती हैं या गलत समझी जा सकती हैं. उदाहरण के लिए हिंदी की अभिव्यक्ति– ''मेरा सर चक्कर खा रहा है.'' का अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद होगा – "My head is eating circles." जो पूरी तरह गलत और हास्यास्पद है.

2. विश्वसनीय अनुवाद

विश्वसनीय अनुवाद का उद्देश्य मूल पाठ के अर्थ, शैली और लहजे को संरक्षित रखना है, साथ ही लक्ष्य भाषा के वाक्यविन्यास और सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप आवश्यक समायोजन करना है. इसका लक्ष्य स्रोत के जितना संभव हो सके उतना करीब रहना है, लेकिन मूल पाठ के इरादे अथवा पठनीयता को खोए बिना.

इस शैली का उपयोग साहित्यिक कृतियों, विज्ञापनों या भाषणों का अनुवाद करते समय किया जाता है, जब अर्थ और शैली दोनों को बनाए रखना आवश्यक होता है. साथ ही कानूनी दस्तावेजों में, जहाँ मूल पाठ के आशय और भावना को संरक्षित रखना महत्वपूर्ण है.

- लाभ
  - मूल की विषय-वस्तु और शैलीगत तत्वों दोनों को संरक्षित रखता है.
  - सटीकता और पठनीयता के बीच संतुलन प्रदान करता है.
- नुकसान
  - कुछ सांस्कृतिक तत्वों को पूरी तरह से व्यक्त करना अभी भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है. उदाहरण के लिए अंग्रेजी के वाक्य "It's raining cats and dogs." का हिंदी अनुवाद – ''बिल्लियों और कुत्तों की बारिश हो रही है.'' सार्थक वाक्य नहीं है और वास्तविक अर्थ जरा भी संप्रेषित नहीं कर रहा है, जो है – ''बहुत तेज बारिश हो रही है.''

3. मुक्त अनुवाद (अर्थ-दर-अर्थ अनुवाद)

'मुक्तअनुवाद' में अनुवादक स्रोत पाठ के साथ पुनर्लेखन और पुनर्संरचना के मामले में अधिक स्वतंत्रता लेता है. यह सटीक शब्दों या संरचना के बजाय समग्र अर्थ को व्यक्त करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है. यह दृष्टिकोण रचनात्मक लचीलेपन

की अनुमति देता है. इसका प्रयोग रचनात्मक लेखन, कविता या विज्ञापन में, जहाँ भावनात्मक स्वर और समग्र संदेश शाब्दिक सटीकता से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, वहाँ होता है. ऐसे मामलों में जहाँ शाब्दिक अनुवाद के परिणामस्वरूप लक्ष्य भाषा में निरर्थक या अजीब वाक्य उत्पन्न हो रहे हों, तो वहाँ भी मुक्तअनुवाद की सहायता लेनी होती है.

- *लाभ*
  - *लक्ष्य भाषा में अधिक स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण होना.*
  - *सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रति बेहतर अनुकूलन की अनुमति देता है.*
- *नुकसान*
  - *मूल पाठ की कुछ बारीकियों को खोने का जोखिम.*
  - *मूल से बहुत दूर भटक सकता है, जिससे गलत व्याख्या हो सकती है. उदाहरणार्थ अंग्रेजी वाक्य "*I'm feeling under the weather." *का हिंदी में मुक्तअनुवाद होगा - "मैं थोड़ा बीमार महसूस कर रहा हूँ." (शाब्दिक अनुवाद की जगह मुहावरेदार अनुवाद अर्थ को अच्छी तरह से अभिव्यक्त कर रहा है.)*

4. *सिमेंटिक अनुवाद*

सिमेंटिक अनुवाद, स्रोत पाठ के सटीक अर्थ को स्थानांतरित करने पर केंद्रित होता है, जबकि लक्ष्य भाषा की भाषाई और व्याकरणिक संरचनाओं का बारीकी से पालन किया जाता है. हालाँकि, यह शाब्दिक अनुवाद की तुलना में अधिक लचीलापन देता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अंतिम उत्पाद मुहावरेदार और स्वाभाविक हो. इसका प्रयोग तब होता है जब साहित्यिक अनुवादों में बारीकियों और गहरे अर्थ को सावधानीपूर्वक व्यक्त करने की आवश्यकता होती है. शैक्षिक ग्रंथों या दार्शनिक कार्यों के लिए भी यह शैली अपनाई जाती है, जहाँ परिशुद्धता महत्वपूर्ण है.

- *लाभ*
  - *यह सुनिश्चित करता है कि मूल का अर्थ पूरी तरह से संरक्षित रहे.*
  - *अनुवाद की संरचना में अधिक छूट प्रदान करता है, जिससे यह अधिक पठनीय हो जाता है.*
- *नुकसान*
  - *यह हमेशा मुक्तअनुवाद जितना स्वाभाविक नहीं हो सकता, यह भाषा युग्म पर निर्भर करता है. उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य :* "He was in two minds about going." *का सिमेंटिक अनुवाद हिंदी में होगा - "वह जाने के बारे में दुविधा में था." यह अनुवाद अर्थ को सुरक्षित रखते हुए भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य को अनुकूलित करता है.*

5. *सांस्कृतिक अनुवाद*

सांस्कृतिक अनुवाद मूल पाठ के सांस्कृतिक संदर्भ और महत्व को स्थानांतरित करने पर केंद्रित है. इसमें पाठ को लक्षित दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए

सांस्कृतिक संदर्भों को अनुकूलित या प्रतिस्थापित करना शामिल है. इस प्रकार का अनुवाद तब आम होता है जब लक्ष्य भाषा में सांस्कृतिक संदर्भ या प्रथाएँ मौजूद नहीं होती हैं. इसका प्रयोग साहित्य, विज्ञापन और फिल्मों में सांस्कृतिक संदर्भ संदेश को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. मुहावरों, कहावतों या संस्कृति-विशिष्ट संदर्भों का अनुवाद भी इस शैली में किया जाता है.

- *लाभ*
  - *अनुवाद को लक्षित दर्शकों के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाता है.*
  - *यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक अर्थ नष्ट न हो जाएँ.*
- *नुकसान*
  - *मूल संदेश या विषय-वस्तु में परिवर्तन हो सकता है, जिससे उसकी प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है.*
  - *स्रोत और लक्ष्य दोनों संस्कृतियों का गहन ज्ञान आवश्यक है.*

उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य – "He brought home the bacon." *का हिन्दी में सांस्कृतिक अनुवाद होगा "वह परिवार का पालन-पोषण करता है." (मुहावरे का सीधे अनुवाद करने के बजाय, सांस्कृतिक रूप से अधिक प्रासंगिक वाक्यांश का उपयोग किया गया है.)*

6. *ट्रांसपोज़िशन*

ट्रांसपोज़िशन में अनुवाद के दौरान वाक्य की व्याकरणिक संरचना को बदलना शामिल है. इसमें शब्द क्रम बदलना, भाषण के भागों को बदलना या अन्य संरचनात्मक परिवर्तन शामिल हो सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक लगे. इसका प्रयोग लक्ष्य भाषा में पठनीयता और सहज प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है. जब स्रोत भाषा में शब्द क्रम भिन्न होता है और शाब्दिक अनुवाद कठिन हो जाता है, तब इस शैली के अनुवाद का उपयोग किया जाता है.

- *लाभ*
  - *यह सुनिश्चित करता है कि अनुदित पाठ स्वाभाविक रूप से संप्रेषित हो.*
  - *वाक्य संरचना को लक्ष्य भाषा की परंपराओं के अनुरूप ढालता है.*
- *नुकसान*
  - *इसके परिणामस्वरूप वाक्य की मूल संरचना नष्ट हो सकती है.*
- *उदाहरण*
  - *अंग्रेजी :* " He is going to the market."
  - *ट्रांसपोज़िशन (हिंदी में): " वह बाज़ार जा रहा है." (हिन्दी में शब्द क्रम को अधिक स्वाभाविक बनाने के लिए समायोजित किया गया है.)*

7. *पैराफ्रास्टिक अनुवाद*

पैराफ्रास्टिक अनुवाद में मूल पाठ को फिर से लिखना शामिल है ताकि उसका अर्थ स्पष्ट या सरल हो सके. ऐसा अकसर तब किया जाता है जब प्रत्यक्ष अनुवाद ठीक से काम नहीं करता है, या जब मूल भाषा अत्यधिक जटिल या पुरानी होती है. इसका प्रयोग गहन, तकनीकी या काव्यात्मक पाठों का अनुवाद करते समय किया जाता है. भाषा की स्पष्टता के लिए, विशेष रूप से शैक्षिक सामग्री में भाषिक स्पष्टता के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है.

- *लाभ*
  - *जटिल विचारों या तकनीकी शब्दावली को सरल बनाने में सहायता करता है.*
  - *यह सामग्री को लक्षित दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाता है.*
- *नुकसान*
  - *इससे मूल पाठ का अति सरलीकरण हो सकता है, जिससे कुछ गहराई या जटिलता समाप्त हो सकती है.*
  - *उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वाक्य* - "The contract stipulates that payment is due in thirty days." *का हिंदी में पैराफ्रास्टिक अनुवाद होगा* - *"समझौते के अनुसार, भुगतान तीस दिनों में किया जाना चाहिए।"*

8. *व्याख्यात्मक अनुवाद*

'व्याख्यात्मक अनुवाद' का एक अधिक गहन रूप है जो अंतर्निहित अर्थ को व्यक्त करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें संदर्भ, भावनाएँ और सूक्ष्मताएँ शामिल हैं, जब शब्दों या वाक्यांशों का सीधा अनुवाद आसानी से संभव न हो. इस शैली का उपयोग अक्सर जटिल दार्शनिक, काव्यात्मक या भावनात्मक विषयों वाले ग्रंथों का अनुवाद करते समय किया जाता है. साहित्य, कविता और भाषणों जैसी भाषिक अभिव्यक्तियों, जिनमें अर्थ की परतें निहित होती हैं, के लिए व्याख्यात्मक अनुवाद की आवश्यकता होती है. भावनात्मक या आलंकारिक विषय-वस्तु, जिसके लिए गहन समझ की आवश्यकता होती है, का अनुवाद करते समय भी यही अनुवाद कारगर होता है.

- *लाभ*
  - *यह सुनिश्चित करता है कि भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई सुरक्षित रहे.*
  - *यह अधिक सूक्ष्म अनुवाद प्रदान करता है.*

- *नुकसान*
  - *मूल पाठ से कुछ विचलन हो सकता है.*
  - *अनुवाद में व्यक्तिपरकता आ सकती है.*

उदाहरण के लिए "She was feeling blue." *का व्याख्यात्मक अनुवाद हिन्दी में "वह उदास महसूस कर रही थी." होगा.*

अनुवाद शैली का चुनाव अनुवाद किए जा रहे पाठ के प्रकार, संदर्भ, लक्षित दर्शकों और अनुवाद के उद्देश्य पर निर्भर करता है. एक कुशल अनुवादक अनुवाद कार्य की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर इन शैलियों के संयोजन का उपयोग कर सकता है.

5.4 *सारबिंदु*

इस इकाई में आपने अनुवाद की विभिन्न शैलियों के विषय में जाना, जो विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विषयों का अनुवाद करने के लिए उपयोगी होती हैं. उदाहरणों के माध्यम से आपने जाना कि अनुवाद केवल एक भाषा के शब्द की जगह दूसरी भाषा का शब्द रख देना ही नहीं है. अपेक्षित परिणाम के लिए अनुवाद की विभिन्न शैलियों का उपयोग आवश्यक है, जो अनुवाद को सार्थक, संप्रेष्य और सरस बनाता है.

5.5 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- *बोधप्रश्न*
  - *निम्नलिखित प्रश्न का विस्तृत उत्तर लिखिए.*

  (1) *अनुवाद की विभिन्न शैलियों का परिचय दीजिए.*

  - *टिप्पणी लिखिए.*

  (1) *शाब्दिक अनुवाद*
  (2) *मुक्तअनुवाद*
  (3) *व्याख्यात्मक अनुवाद*

  - *निम्नलिखित में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.*

  (1) ___________ *शैली का प्रयोग प्राय: तकनीकी या कानूनी दस्तावेजों में किया जाता है.*

  (2) ___________ *अनुवाद का उद्देश्य मूल पाठ के अर्थ, शैली और लहजे को संरक्षित रखना है.*

  (3) ___________ *अनुवाद का दृष्टिकोण रचनात्मक लचीलेपन की अनुमति देता है.*

  (4) ___________ *अनुवाद स्रोत पाठ के सटीक अर्थ को स्थानांतरित करने पर केंद्रित होता है.*

  (5) ___________ *अनुवाद मूल पाठ के सांस्कृतिक संदर्भ और महत्व को स्थानांतरित करने पर केंद्रित है.*

5.6 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *साहित्यानुवाद – संवाद और संवेदना, आरसू, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली*
- *अनुवाद विज्ञान की भूमिका, के. के. गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली*
- *अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, जी. गोपीनाथन, लोकभारती, इलाहाबाद*
- Art of translation - R. Raghunath. - Bharatiya Anuvad parished , New Delhi
- Art of translation - Theodare Savary - Cape, London

इकाई 6 अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद

रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 अनुवादक की योग्यता

6.4 सफल अनुवाद

6.5 सारबिंदु

6.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

6.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

6.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! हिंदी भाषा के प्रति आपकी रुचि को और अधिक विकसित और प्रगाढ़ करने के लिए एवं आधुनिक युग में हिंदी भाषा के विविध क्षेत्रों में हो रहे प्रयोग के बारे में आपको अवगत कराने के लिए 'अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद' विषय इस इकाई में रखा गया है इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- अनुवादक की योग्यता के बारे में जान सकेंगे.
- अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की क्या भूमिका रहती है इसके बारे में जान सकेंगे.
- अनुवाद कार्य में सांस्कृतिक परिवेश का क्या महत्व रहता है वह समझ सकेंगे.
- सफल अनुवाद किसे कहते हैं इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर पाएंगे.
- अनुवाद कार्य में प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग क्यों आवश्यक है इसके बारे में जानेंगे.

6.2 प्रस्तावना

आज के युग में अनुवाद अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है. आज प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता है, किन्तु इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक योग्य अनुवादक का होना भी अनिवार्य है . यदि अनुवादक में योग्य क्षमता ना हो तो समग्र अनुवाद कार्य निष्फल हो जाता है. इस प्रकार किसी भी कृति या पाठ के अनुवाद की सफलता या असफलता उसके अनुवादक पर निर्भर रहती है. इस इकाई में हम अनुवाद-कर्ता की योग्यता एवं एक सफल अनुवाद किसे कहा जाए इस सन्दर्भ में चर्चा करेंगे.

6.3 *अनुवादक की योग्यता*

एक योग्य अनुवादक में निम्नलिखित गुण होना आवश्यक है.

- *स्रोत भाषा का ज्ञान*

अनुवाद की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण तत्व स्रोत भाषा की समझ होती है, क्योंकि यही इसकी पहली आवश्यकता होती है. यदि अनुवादक को मूल भाषा का समुचित ज्ञान नहीं होगा, तो वह उसके भाव और संदर्भ को सही तरीके से नहीं पकड़ पाएगा. बिना स्रोत भाषा को पूरी तरह समझे, किसी भी पाठ को लक्ष्य भाषा में सटीक रूप से प्रस्तुत करना कठिन हो जाता है. जब अनुवादक को स्रोत भाषा का सम्पूर्ण बोध होता है, तभी वह उसके व्याकरण, मुहावरों, कहावतों और सांस्कृतिक पहलुओं को सही रूप में आत्मसात कर सकता है. इसलिए, सफल अनुवाद के लिए स्रोत भाषा की गहरी पकड़ अनिवार्य होती है.

- *लक्ष्य भाषा का ज्ञान*

जिस भाषा में मूल पाठ का अनुवाद किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है. केवल स्रोत भाषा की समझ से अनुवाद संभव नहीं हो सकता. अनुवादक के लिए स्रोत भाषा के साथ-साथ लक्ष्य भाषा का ज्ञान भी उतना ही अनिवार्य होता है. क्योंकि जब तक अनुवादक लक्ष्य भाषा में पूरी पकड़ नहीं रखेगा, तब तक वह मूल लेखक की भावनाओं और विचारों को सटीक रूप से पाठकों तक नहीं पहुँचा पाएगा. लेखक जिन संवेदनाओं और अर्थों को अभिव्यक्त करना चाहता है, उन्हें उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक होता है. यदि अनुवादक लक्ष्य भाषा में दक्ष नहीं होगा, तो आशय विकृत हो सकता है, जिससे अनुवाद का मूल उद्देश्य प्रभावित होगा. इसलिए, स्रोत भाषा की ही तरह लक्ष्य भाषा की संरचना, व्याकरण, मुहावरे, कहावतें और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समझ अनिवार्य होती है. इन तत्वों की सही पकड़ के बिना कोई भी अनुवाद पूर्ण और प्रभावी नहीं हो सकता.

- *अनुवाद-प्रक्रिया का ज्ञान*

अनुवाद एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जिसके कुछ निश्चित नियम और चरण होते हैं. अनुवादक को इन्हीं चरणों का पालन करते हुए कार्य करना पड़ता है, तभी भावों और अर्थों का सही संप्रेषण संभव हो पाता है. यदि किसी व्यक्ति को अनुवाद प्रक्रिया की समुचित समझ नहीं होगी, तो वह एक सफल अनुवादक नहीं बन सकता. यह ठीक उसी तरह है जैसे अर्जुन को चक्रव्यूह में प्रवेश और उससे बाहर निकलने की पूरी विधि ज्ञात थी, लेकिन उनके पुत्र अभिमन्यु को केवल प्रवेश करने का ज्ञान था, अंतिम द्वार को भेदने की विधि वह नहीं जानता था. इसी कारण वह चक्रव्यूह में फँस गया. इसी प्रकार, यदि अनुवादक को अनुवाद की संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी नहीं होगी, तो वह भी एक सफल अनुवाद नहीं कर पाएगा. इसलिए, अनुवादक के लिए इस प्रक्रिया की सम्पूर्ण समझ आवश्यक है.

- *व्याकरण एवं शब्दावली का ज्ञान*

एक कुशल अनुवादक के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा, दोनों के व्याकरण का गहरा ज्ञान आवश्यक होता है. जब अनुवादक व्याकरणिक नियमों से परिचित होगा और साथ ही दोनों भाषाओं की समृद्ध शब्दावली पर उसकी पकड़ होगी, तब ही अनुवाद भाषा और व्याकरण की दृष्टि से प्रभावी एवं शुद्ध बन सकेगा. यदि व्याकरण में गलती होगी या अनुवादक के पास उपयुक्त शब्दों का पर्याप्त भंडार नहीं होगा, तो अनुवाद की गुणवत्ता प्रभावित होगी और उसमें त्रुटियाँ रह जाएँगी. इसलिए, सफल अनुवाद के लिए इन दोनों पहलुओं का ज्ञान अनिवार्य माना जाता है.

- *सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान*

एक अनुवादक के लिए सांस्कृतिक परिवेश की समझ भी आवश्यक होती है. प्रत्येक क्षेत्र की भाषा वहाँ की विशिष्ट संस्कृति से प्रभावित होती है, जिससे लोगों की जीवनशैली, परंपराएँ और सामाजिक रीति-रिवाज निर्मित होते हैं. इन परंपराओं का असर भाषा पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. कई बार ऐसे विशिष्ट शब्द, मुहावरे या लोकोक्तियाँ प्रयोग में आती हैं, जिनका सही अर्थ वही व्यक्ति समझ सकता है, जो उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित हो. यदि अनुवादक को इस सांस्कृतिक ज्ञान का अभाव होगा, तो वह मूल भावों को सही ढंग से नहीं समझ पाएगा और अनुवाद भी प्रभावशाली नहीं बन सकेगा. इसलिए, सटीक अनुवाद के लिए भाषा के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक जड़ों की जानकारी भी आवश्यक है.

6.4 *सफल अनुवाद*

अनुवाद शब्द सुनने में जितना सरल लगता है, वास्तव में उसका कार्य उतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण होता है. अनुवादक के गुणों को समझने के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि हम सफल अनुवाद किसे कह सकते हैं उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर उसकी विशेषताओं पर गहराई से विचार करें.

सफल अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और संदर्भों का संप्रेषण भी है. अनुवादक को केवल दोनों भाषाओं का ज्ञाता ही नहीं, बल्कि एक कुशल संप्रेषक भी होना चाहिए. यदि मूल कृति के भाव, रस और संवेदनाएँ लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत नहीं हो पाते, तो अनुवाद अधूरा रह जाता है. यही कारण है कि अनुवाद में सबसे महत्वपूर्ण पहलू 'संदेश का सही संप्रेषण' होता है. यदि अनुवादक इस कार्य में सफल होता है, तो उसका अनुवाद भी सफल माना जाता है.

अनुवाद के कई प्रकार होते हैं- गद्यानुवाद ,पद्यानुवाद , छायानुवाद, आशु अनुवाद आदि. प्रत्येक प्रकार की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं और अनुवाद करते समय इन्हें ध्यान में रखना अनिवार्य होता है. विशेष रूप से, शब्द चयन को लेकर अत्यधिक सावधानी बरती जानी चाहिए. गद्य के लिए शब्दावली सीधी और सरल होती है, जबकि

पद्य में अलंकार, व्यंजना और गूढ़ता का प्रयोग अधिक होता है. यदि कोई कृति पद्य में लिखी गई है और उसका अनुवाद किसी अन्य भाषा में किया जा रहा है, तो उस भाषा में ऐसे शब्दों का चयन करना आवश्यक होगा जो मूल रचना की काव्यात्मकता को बनाए रखे. यदि अनुवाद में वह भावनात्मक प्रवाह नहीं रह जाता, तो मूल कृति का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है.

एक कुशल अनुवादक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह किस प्रकार की कृति का अनुवाद कर रहा है और मूल पाठ के लेखक की संवेदनाओं को कैसे संप्रेषित कर सकता है. अनुवाद का उद्देश्य केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए पाठकों को वही अनुभव प्रदान करना है, जो मूल कृति के पाठकों को प्राप्त होता है.

अब, जैसे हमने अनुवादक के गुणों की चर्चा की, वैसे ही सफल अनुवाद को समझने के लिए इसके प्रमुख तत्वों को अलग-अलग बिंदुओं में विभाजित कर उसका गहराई से विश्लेषण करेंगे.

- *स्रोत सामग्री की स्पष्टता*

अनुवाद की सटीकता मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि स्रोत सामग्री कितनी स्पष्ट और सुगठित है. यदि मूल पाठ अस्पष्ट हो या उसमें द्विअर्थी वाक्य हों, तो अनुवाद में त्रुटियों की संभावना बढ़ जाती है. अनुवादक के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह सामग्री को सही संदर्भ में समझे, ताकि अनुवाद न केवल अर्थपूर्ण बल्कि प्रभावी भी हो. उदाहरण के तौर पर, यदि किसी कानूनी दस्तावेज़ में अस्पष्ट शब्दों का उपयोग किया गया हो, तो गलत अनुवाद से गंभीर कानूनी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं. इसी प्रकार, तकनीकी या चिकित्सा से जुड़े दस्तावेज़ों में यदि जानकारी स्पष्ट नहीं है, तो गलतफहमी पैदा हो सकती है, जिससे महत्वपूर्ण जानकारियों का गलत संप्रेषण हो सकता है. साहित्यिक अनुवाद में यदि मूल पाठ की अस्पष्टता बनी रहे, तो भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रभावित हो सकती है और अर्थ का ह्रास हो सकता है. इसलिए, अनुवादक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यदि कोई वाक्य संदिग्ध लगे, तो वह लेखक या विशेषज्ञ से परामर्श ले और संदर्भ को समझकर अनुवाद करें. स्पष्ट और संगठित स्रोत सामग्री के बिना उच्च गुणवत्ता वाला अनुवाद प्राप्त करना कठिन हो सकता है.

- *प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग*

अनुवाद में सही शब्दावली का चयन करना अत्यंत आवश्यक होता है, खासकर तकनीकी, कानूनी, चिकित्सा और साहित्यिक अनुवाद के मामले में. हर क्षेत्र की अपनी विशिष्ट भाषा होती है, जो विषय की स्पष्टता और प्रामाणिकता बनाए रखने में सहायक होती है. उदाहरण के लिए, चिकित्सा अनुवाद में 'डायग्नोसिस' को 'निदान' और कानूनी अनुवाद में 'एफिडेविट' को 'शपथ पत्र' कहना जरूरी होता है, ताकि सही अर्थ बना रहे. इसी तरह, तकनीकी अनुवाद में जटिल प्रक्रियाओं और शब्दों

को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है, जिससे उपयोगकर्ता को कोई भ्रम न हो. साहित्यिक अनुवाद में भावनात्मक अभिव्यक्ति, लेखन शैली और संदर्भ को बनाए रखना आवश्यक होता है, ताकि पाठक मूल रचना के भाव को महसूस कर सके. यदि किसी अनुवाद में गलत या असंगत शब्दों का उपयोग किया जाता है, तो संचार में अस्पष्टता आ सकती है. इसलिए, अनुवादक को विषय-विशेष की भाषा और संदर्भ की अच्छी समझ होनी चाहिए, ताकि अनुवाद न केवल अर्थपूर्ण बल्कि प्रभावशाली भी हो.

- *शैली और प्रवाह*

सफल अनुवाद कार्य में शैली और प्रवाह का बहुत बड़ा महत्व होता है, क्योंकि इसके माध्यम से पाठ प्रभावी और पाठकों के लिए सहज बनाता है.

- *शैली का महत्व*

शैली किसी भी भाषा की लेखन पद्धति, तकनीकी विवरण, औपचारिक या अनौपचारिक स्वरूप को निर्धारित करती है. यदि अनुवाद के दौरान मूल रचना की शैली सुरक्षित नहीं रहती, तो उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति प्रभावित हो सकती है. उदाहरण के लिए :-

साहित्यिक अनुवाद में कल्पनाशीलता और सांस्कृतिक पहलुओं का विशेष ध्यान दिया जाता है.

वहीं, तकनीकी या विधिक अनुवाद में हर शब्द की सटीकता और स्पष्ट प्रस्तुति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है.

- *प्रवाह का महत्व*

प्रवाह का महत्व यह है कि अनुदित सामग्री पढ़ते समय किसी प्रकार की अड़चन महसूस न हो और वह स्वाभाविक रूप से मूल पाठ की तरह प्रतीत हो. यदि अनुवाद में वाक्य रचना असंगत हो, तो पाठक को अर्थ ग्रहण करने में दिक्कत हो सकती है. अनुचित प्रवाह वाला अनुवाद पाठक के अनुभव को प्रभावित कर सकता है, जिससे वह मूल संदर्भ से भटक सकता है. एक कुशल अनुवादक वह होता है, जो मूल पाठ का भाव, संदर्भ और लय को बनाए रखते हुए उसे लक्षित भाषा में सहज और प्रभावशाली रूप में ढाल सके.

- *संस्कृति के अंतर को जानना*

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है. दुनिया के विभिन्न कोनों में फैले समाज अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर पहचाने जाते हैं. कुछ देशों में, जहाँ जनसंख्या अधिक होती है, या जिनका क्षेत्रफल बड़ा होता है वहाँ एक ही देश के भीतर कई संस्कृतियों का समावेश देखने को मिलता है. साहित्यकार, जो स्वयं समाज का अभिन्न

अंग होता है, अपनी रचनाओं में उस समाज की झलक स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करता है.

साहित्य केवल शब्दों का संकलन नहीं, अपितु संस्कृति और सभ्यता का दर्पण होता है. अनेक साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से अपने समाज और उसकी परंपराओं का इतिहास संजोकर रखा है. उनकी कृतियाँ न केवल पाठकों का मनोरंजन करती हैं, बल्कि समाज की पहचान और उसकी सांस्कृतिक विशेषताओं को भी विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती हैं. इस प्रकार, साहित्यकार केवल रचनाकार नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपराओं का संरक्षक भी होता है. जब कोई साहित्यिक कृति प्रसिद्धि प्राप्त करती है, तो अन्य भाषाओं के साहित्यकार उसे अपने पाठकों तक पहुँचाने के लिए उसका अनुवाद करना चाहते हैं. अनुवाद केवल भाषा का स्थानांतरण नहीं, बल्कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति के बीच पुल बनाने की कला है. अनुवादक को इस बात की समझ होनी चाहिए कि मूल लेखक की संस्कृति और उसकी अपनी संस्कृति में अंतर हो सकता है. इसलिए, अनुदित कृति को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि वह नए पाठकों के लिए भी उतनी ही प्रभावशाली और सार्थक बनी रहे.

सफल अनुवाद वही होता है, जो न केवल मूल कृति के भावों और विचारों को सुरक्षित रखे, बल्कि उसे नए सांस्कृतिक संदर्भ में सहज और आकर्षक बनाए. जब अनुवादक अपने समाज और पाठकों की संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करता है, तो उसकी कृति व्यापक स्वीकार्यता प्राप्त करती है. एक कुशल अनुवादक भाषा की सीमाओं को मिटाकर साहित्य को वैश्विक मंच प्रदान करता है और यही उसकी सफलता का प्रमाण होता है.

- *मुहावरे और कहावतों के प्रयोग में ध्यातव्य बातें*

*अनुवाद में मुहावरे और कहावतों का सटीक प्रयोग करना जटिल कार्य होता है, क्योंकि वे भाषा के साथ-साथ संस्कृति से भी गहरे जुड़े होते हैं. यदि इन्हें शब्दशः अनुवाद किया जाए, तो कई बार उनका अर्थ विकृत हो सकता है या संदर्भ से हटकर लग सकता है. उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी कहावत "*Kick the bucket" *का सीधा हिंदी अनुवाद "बाल्टी को लात मारना" किया जाए, तो इसका कोई सार्थक अर्थ नहीं निकलता, जबकि इसका सही भावानुवाद "मृत्यु को प्राप्त होना" होगा. इसी तरह, हिंदी कहावत "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" को अगर ज्यों का त्यों अंग्रेज़ी में बदल दिया जाए, तो अर्थ स्पष्ट नहीं होगा, लेकिन इसका भावानुवाद* "A bad workman blames his tools" *होगा, जिससे आशय बना रहेगा.*

मुहावरे और कहावतों का अनुवाद करते समय यह जरूरी है कि केवल शब्द न बदले जाएँ, बल्कि उनकी भावना और संदर्भ को भी ध्यान में रखा जाए. हर भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग होती है, इसलिए अनुवादक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अनुदित मुहावरे या कहावतें न केवल अर्थपूर्ण हों, बल्कि लक्षित भाषा के पाठकों के लिए स्वाभाविक भी लगें. यदि किसी भाषा में समानार्थी मुहावरे या कहावत

उपलब्ध न हो, तो उसके भाव को स्पष्ट करने के लिए व्याख्यात्मक अनुवाद किया जाना चाहिए, ताकि संदेश की प्रभावशीलता बनी रहे.

- *स्वचालित (मशीनी) अनुवाद पर पूरी तरह निर्भर न रहें*

स्वचालित अनुवाद सहायक अवश्य है, लेकिन उस पर पूरी तरह भरोसा करना जोखिम भरा साबित हो सकता है, क्योंकि यह संदर्भ को कई बार गलत ढंग से प्रस्तुत करता है और शब्दों का सीधा अनुवाद करने के कारण मूल आशय बदल सकता है. भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती, बल्कि उसमें संस्कृति, भावनाएँ और सामाजिक संदर्भ भी शामिल होते हैं, जिन्हें मशीनें सटीक रूप से समझने में सक्षम नहीं होतीं. इसके अतिरिक्त, स्वचालित अनुवाद में व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ और शैलीगत विसंगतियाँ देखने को मिल सकती हैं, जिससे वाक्य स्वाभाविक और सहज नहीं लगते. जटिल क्षेत्रों जैसे कि विधि, चिकित्सा और तकनीकी विषयों में यह प्रणाली कई बार भ्रम उत्पन्न कर सकती है. साथ ही, इन सेवाओं के उपयोग से डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा को भी खतरा हो सकता है. इसलिए, स्वचालित अनुवाद को केवल एक सहायक साधन के रूप में अपनाना चाहिए और महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों या संचार के लिए मानव विशेषज्ञों की समीक्षा आवश्यक है.

- *अनुदित कृति की समीक्षा*

अनुवाद की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उसकी समीक्षा बेहद जरूरी होती है. चाहे अनुवाद मशीन द्वारा किया गया हो या व्यक्ति द्वारा, इसमें संदर्भगत त्रुटियाँ, व्याकरणिक गलतियाँ और सांस्कृतिक असमानताएँ आ सकती हैं, जिससे मूल भाव में बदलाव संभव है. समीक्षा करने से यह तय किया जाता है कि अनुदित सामग्री न केवल अर्थपूर्ण हो, बल्कि भाषा की स्वाभाविकता भी बनी रहे. खासतौर पर कानूनी, चिकित्सा, तकनीकी और साहित्यिक दस्तावेजों में यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इन क्षेत्रों में की गई मामूली चूक भी गंभीर असर डाल सकती है. साथ ही, अनुवाद को स्थानीय जरूरतों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप ढालना आवश्यक होता है, जिससे लक्षित पाठक उसे आसानी से समझ सकें. इस कारण, किसी भी अनुवाद को अंतिम रूप देने से पहले उसकी विस्तृत समीक्षा जरूरी है, ताकि उसकी सटीकता और प्रभाव सुनिश्चित किया जा सके.

6.5 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी. अब आप इकाई के प्रत्येक उप-शीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए. जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी. हम भी यहाँ यही काम करने जा रहे हैं. आप अपनी सूची से इस सूची का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- *इस इकाई को पढ़कर हमने अनुवादक की योग्यता के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की.*
- *अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की क्या भूमिका रहती है इसके बारे में जाना.*
- *सांस्कृतिक परिवेश का अनुवाद कार्य में क्या महत्व रहता है इसके बारे में जाना.*
- *सफल अनुवाद किसे कहते हैं इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की.*
- *प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग अनुवाद कार्य में कितना आवश्यक है यह जाना.*
- *मुहावरे और कहावतों का अनुवाद करते समय कौन-सी बातों का ध्यान रखना चाहिए इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की.*
- *मशीनी अनुवाद पर हमें पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहिए यह जाना.*

6.6 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- *बोधप्रश्न*

- *निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए.*

(1) *अनुवादक की योग्यता के बारे में विस्तृत चर्चा कीजिए.*
(2) *सफल अनुवाद के तत्वों पर प्रकाश डालिए.*
(3) *सफल अनुवाद किसे कहते हैं? सविस्तार समझाइए.*

- *टिप्पणी लिखिए.*

(1) *अनुवादक को स्रोत भाषा का ज्ञान आवश्यक है.*
(2) *अनुदित पाठ की समीक्षा क्यों आवश्यक है?*
(3) *मुहावरे और कहावतों के अनुवाद में ध्यातव्य बातें*
(4) *अनुवादक को अनुवाद-प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक*
(5) *मुहावरे और कहावतों से जुड़ी समस्याएँ*

- *एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए.*

(1) *स्रोत भाषा किसे कहते हैं?*
(2) *लक्ष्य भाषा किसे कहते हैं?*
(3) 'KICK THE BUCKET' *का क्या अर्थ है?*
(4) *'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' कहावत का अंग्रेजी अनुवाद क्या होगा?*
(5) *स्वचालित अनुवाद का क्या अर्थ है?*

6.7 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी*
- *अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी*
- *अनुवाद की सामाजिक भूमिका, डॉ. रीतारानी पालीवाल*
- *अनुवाद और अनुप्रयोग, डॉ. दिनेश चमौला 'शैलेश'*

इकाई 7 सर्जनात्मक अनुवाद का एक नमूना 'कंकू'

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 लेखक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

7.3.2 कृतित्व परिचय

7.4 अनुवादक का परिचय

7.4.1 जीवन परिचय

7.4.2 कृतित्व परिचय

7.5 सर्जनात्मक अनुवाद का अर्थ

7.6 'कंकू' कहानी का कथानक

7.7 अनुवाद की सार्थकता

7.8 सारबिंदु

7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

7.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! आप 7वीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं, हिंदी भाषा के प्रति आपकी रुचि को और अधिक विकसित और प्रगाढ़ करने के लिए गुजराती एवं हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार पन्नालाल पटेल की एक अनुदित रचना इस इकाई में रखी गयी है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- लेखक पन्नालाल पटेल के जीवन एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे.
- अनुवादक प्रो. आलोककुमार गुप्त के जीवन एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे.
- सर्जनात्मक अनुवाद का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- -'कंकू' कहानी का कथानक जान सकेंगे.
- रचना के अनुवाद की सार्थकता को जानेंगे.

7.2 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को गद्य काल के नाम से भी जाना जाता है. आधुनिक काल में गद्य की अनेक विधाओं का आविर्भाव हुआ. जिसने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया. आधुनिक काल से पूर्व आदिकाल और मध्यकाल में गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य साहित्य अधिक लिखा जाता था. उस समय भी गद्य साहित्य की रचना हुई थी किंतु उसकी मात्रा कम थी. आधुनिक काल में यदि गद्य साहित्य की बात करें तो गद्य की अनेक विधाएँ देखने को मिलती हैं जैसे उपन्यास, नाटक, कहानी, एकांकी, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, निबंध, पत्र लेखन, रिपोर्ताज, साक्षात्कार आदि.

हिंदी साहित्य को इन सभी गद्य रचनाओं ने तो समृद्ध किया ही है इसके अतिरिक्त यदि हम बात करें तो अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य वैश्विक साहित्य से जुड़ गया है. अनुवाद वह माध्यम बन गया है जो हिंदी भाषा को विश्व की लगभग सभी भाषाओं के साथ जोड़ सके. अन्य भाषाओं के साहित्य का अनुवाद हिंदी में होता है जिससे हम केवल भारत ही नहीं अपितु समग्र विश्व के साहित्य एवं संस्कृति से परिचित हो सकते है. तो साथ ही साथ हिंदी साहित्य की कई प्रसिद्ध पुस्तकों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिससे वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य का प्रचार हुआ है. जैसे -'गोदान', 'मधुशाला', 'कामायनी', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'मृत्युंजय', 'राग दरबारी' आदि.

इसी तरह जिस प्रकार विश्व साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ उसी प्रकार भारत के विभिन्न राज्य की अनेक भाषाओं के साहित्य का भी हिंदी में अनुवाद हुआ जो बहुचर्चित रहा. आज हम ऐसी ही एक अनुदित रचना की बात करने वाले हैं, जिसका गुजराती भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद हुआ है. जिसके लेखक हैं गुजराती गद्य साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पन्नालाल पटेल. उनकी जिस रचना की बात आज हम करने वाले हैं उसका नाम है 'कंकू'.

'कंकू' कहानी का हिंदी भाषा में सर्जनात्मक अनुवाद किया प्रो. आलोककुमार गुप्त ने जिसकी आगे हम विस्तार से चर्चा करेंगे.

7.3 लेखक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

पन्नालाल पटेल का जन्म गुजरात एवं राजस्थान की सीमा पर स्थित मांडली नामक गाँव में हुआ था. यह गाँव डूंगरपुर जिले के सीमलवाड़ा तहसिल में स्थित है. उनके पिता का नाम 'नानालाल' था. वे नानशा के नाम से भी जाने जाते थे. पन्नालाल के पिता गाँव के लोगों को रामायण एवं महाभारत का पाठ पढ़कर सुनाते थे, तथा प्रतिदिन सुबह वे 'ओखाहरण' की कथा भी गाकर सुनाया करते थे. अत: लोग उन्हें 'भगत'(भक्त) कहकर पुकारते थे. उनका घर 'विद्या का घर' नाम से प्रसिद्ध था.

पन्नालालजी की माँ का नाम हीराबा था. पिता की मृत्यु के पश्चात उनकी माँ हीराबा ने ही बच्चों का पालन-पोषण किया था. सभी भाइयों में पन्नालाल सबसे छोटे थे. अतः उन्हें माँ का विशेष स्नेह मिला था. लोग उन्हें 'माँ का लाड़ला' कहकर पुकारते थे. वे अपना अधिक समय माँ के साथ ही बिताते थे. माँ अपना काम करती जाती और साथ में पन्नालाल को कहानियाँ सुनाया करती. लेखक ने अपनी माँ से 'छप्पनिया अकाल' की अनेक बातें सुनी थीं. उन्हीं स्मरणों के आधार पर उन्होंने 'मानवी नी भवाई' नामक उपन्यास में अकाल का जीवंत चित्रण किया.

पन्नालाल जी का जन्म ग्राम्य परिवेश में हुआ था. इसी कारण उनके साहित्य में हमे आँचलिकता के दर्शन होते हैं. उनके गाँव का प्राकृतिक सौंदर्य भी अद्‌भूत था. वृक्ष-लताएँ, जंगल, हरी-भरी पहाड़ियाँ तथा पास ही में बहती वात्रक नदी, इन सभी दृश्यों के बीच पन्नालाल घुमा करते थे. उनकी रचनाओं में प्रकृति का जो वर्णन चित्रित है, वह इसी परिवेश का प्रतिबिम्ब है.

- *शिक्षा एवं व्यवसाय*

उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा सर प्रताप हाईस्कूल, इडर से ली. यहाँ वे केवल चौथी कक्षा तक ही पढ़ सके. किन्तु घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वे बहुत आगे तक नहीं पढ़ पाए. जब वे ईडर की बोर्डिंग में थे, तब उनकी मुलाकात उमाशंकर जोशी से भी होती है.

उनका जीवन संघर्षमय रहा. उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष के दिनों को 'वासंती दिन' कहा है. घर की जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए उन्हें अनेक संघर्षो का सामना करना पड़ा. उन्होंने किसी भी काम को छोटा नही समझा. उन्होंने गाँव आकर एक कपड़े की दुकान भी खोली पर वह कुछ खास चली नही. डूंगरपुर के पास एक शराब की भट्ठी में भी काम किया. अहमदाबाद में उन्होंने अनेक जगहों पर नौकरी की थी. एक सेठजी के यहाँ इलेक्ट्रिसिटी कंपनी में वे ऑयलमैन के रूप में काम करते थे, घर पर रसोई का काम करते थे और साथ ही उनके बच्चों को भी पढ़ाना पड़ता था. पन्नालालजी ने कपड़े की दुकान में भी काम किया. एक सेठ के यहाँ झाडू-पोछा लगाने से लेकर क्लर्क तक के अनेक काम उन्होंने पूरी निष्ठा से किए. इस प्रकार उन्होंने अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए अनेक प्रकार के संघर्षो का सामना किया.

बालपन के सहपाठी श्री उमाशंकर जोशी बहुत बड़े कवि बन गए हैं यह जानकर पन्नालाल उन्हें छंद में पत्र लिखते हैं. उमाशंकर जोशी ने पत्र का प्रत्युत्तर भी दिया और पन्नालालजी को लिखते रहने की प्रेरणा भी दी. उन्होंने कहानी लिखने का प्रयत्न किया. 'शेठ की शारदा' नाम से एक कहानी लिखकर उसे 'फूलछाब' दैनिक में प्रकाशन हेतु भेजी और झवेरचंद मेघाणी जी ने सहर्ष उस कहानी को प्रकाशित भी किया.

मेघाणी जी ने पन्नालाल के पास 'फूलछाब' के लिए एक भेटपुस्तक लिखने का प्रस्ताव रखा. जिसके परिणाम स्वरूप पन्नालाल की कलम से मात्र बीस-बाईस दिनों की सीमित अवधि में ही 'मळेला जीव' श्रेष्ठतम रचना का निर्माण हुआ.

समय के साथ-साथ साहित्य जगत में पन्नालाल पटेल को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ. सन् 1985 ई. में उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'मानवी नी भवाई' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ. इसके उपरांत उनको रणजीतराम सुवर्ण चंद्रक गुजरात का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार भी प्राप्त हुआ.

7.3.2 कृतित्व परिचय

गुजराती भाषा के एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार श्री पन्नालाल पटेल का साहित्य-सृजन एक विशाल सागर जैसा है. वे मूल रूप से एक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं. उनको ज्ञानपीठ पुरस्कार भी उनके उपन्यास के लिए ही मिला था. उन्होंने उपन्यास विधा को एक नई दिशा प्रदान की. पन्नालाल के उपन्यासों के विषय वैविध्यपूर्ण रहे हैं. ग्राम्य प्रदेश के निम्न और मध्यम वर्ग के लोग उनके उपन्यास के केंद्रीय पात्र हैं.

- प्रमुख उपन्यास

उनके प्रमुख उपन्यासों में, 'वळामणा', 'मानवी नी भवाई', 'मळेला जीव', 'भांग्या ना भेरू', 'घम्मर वलोणु', 'मनखावतार', 'नछुटके', 'यौवन', 'सुरभि', 'फकीरों', 'अमे बे हेनो', 'अल्लड़ छोकरी', 'आंधी आषाढ़ नी', 'पार्थ ने कहो चढ़ावे बाण', 'रामे सीता ने मार्या जो', 'देवयानी'-ययाति', 'जेणे जीवी जाणयू', 'उर्वशी-पुरुरवा', 'जिंदगी संजीवनी' आदि समाविष्ट हैं.

पन्नालाल के कहानी-सर्जन की यदि बात करें तो, ग्राम्य परिवेश, ग्राम्य भाषा,ग्राम्य संस्कृति के साथ सहज रूप से मानव मन की संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने बहुत ही मार्मिक कथावस्तु के साथ कहानियों का निर्माण किया है. उनकी कहानियों में प्रेम, विरह, दाम्पत्य-जीवन, ग्राम्य-चेतना, परिवार जैसे अनेक पहलुओं का चित्रण हुआ है.

- प्रमुख कहानी-संग्रह

'सुख-दुख ना साथी', 'जिंदगी ना खेल', 'लख चौरासी', 'साचा समणा', 'वात्रक ने काँठे', 'पन्नालाल नो वार्ता वैभव', 'औरता', 'पारेवडा','पन्नालाल नी श्रेष्ठ वार्ताओं', 'मनना मोरला', 'पानेतर ना रंग', 'चितरेली दिवालो', 'मोरली ना मूंगा सूर', 'माळो', 'वट नो कटको' आदि समाविष्ट हैं.

उपन्यास एवं कहानी के उपरांत उन्होंने नाटक, एकांकी एवं बाल साहित्य भी लिखा है. 'जमाइराज' उनका एकांकी संग्रह है. उनका बाल साहित्य भी उत्कृष्ट है. 'अलप-जलप' और 'अलक-मलक' उनके आत्मकथात्मक संस्मरण ग्रंथ है. इस प्रकार

उनका साहित्य सृजन बहुत ही विस्तृत है. वे गुजराती साहित्य के एक अपूर्व साहित्य-सर्जक हैं. :

- बोध प्रश्न
  - निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में लिखिए.

(1) पन्नालाल पटेल का जन्म कहाँ हुआ था?
(2) 'शेठ की शारदा' कहानी किस दैनिक में प्रकाशित हुई थी?
(3) पन्नालाल पटेल को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस कृति के लिए मिला था?
(4) पन्नालाल पटेल के पिता का नाम क्या था?
(5) पन्नालाल पटेल के एकांकी संग्रह का नाम क्या है?

7.4 अनुवादक का परिचय

7.4.1 जीवन परिचय

'कंकू' कहानी के अनुवादक प्रो. आलोक कुमार गुप्त का जन्म 17 नवंबर, सन् 1956 ई. में सिरसागंज, जिला फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था. उनके पिताजी का नाम छोटेलाल गुप्त एवं माताजी का नाम रामश्री देवी था. उनकी आरंभिक शिक्षा सिरसागंज में हुई. प्रो. आलोक कुमार गुप्त ने अपने जीवन में अनेक उच्चस्तरीय पदों को ग्रहण कर उन्हें विभूषित किया. उनकी बात करें तो-

अवकाश प्राप्त वरिष्ठ प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन केंद्र, पूर्व अधिष्ठाता (डीन), भाषा, साहित्य एवं अध्ययन संस्थान एवं पूर्व कुलसचिव (रजिस्ट्रार) गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर आदि पदों पर अपनी सेवा दी. आपको स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में 40 वर्ष का शैक्षणिक अनुभव रहा है. कई प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं.

7.4.2 कृतित्व परिचय

शोध रुचि एवं विशेष अध्ययन : आधुनिक साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, भारतीय साहित्य एवं अनुवाद अध्ययन

- प्रकाशित ग्रंथ समीक्षा – **5**

साहित्य के सरोकार
रचना और आलोचना का वर्तमान परिदृश्य
साहित्यनो सामाजिक संदर्भ
मुक्तिबोध : युगचेतना और अभिव्यक्ति
साहित्य : केन्द्र और परिधि

अनुवाद -गुजराती से हिंदी में - **8**

सरस्वती चंद्र, खंड-1 (*गोवर्धनराम त्रिपाठी*)
सरस्वती चंद्र, खंड-4 *पूर्वार्ध* (*गोवर्धनराम त्रिपाठी*)
सरस्वती चंद्र, खंड-4 *उत्तरार्ध* (*गोवर्धनराम त्रिपाठी*)
प्रेमतीर्थ (*कहानी संग्रह*), *नरेन्द्र मोदी*
गोकुल-मथुरा-द्वारिका (*उपन्यास त्रयी*), *रघुवीर चौधरी*
धूल पर पदचिह्न , चन्द्रकांत शेठ
आगनी हसी (रामदरश मिश्र)
आधुनिक भारतीय कविता संचयन
भारतीय साहित्यना निर्माता गुरू गोविंद सिंह
भारतीय साहित्यना निर्माता अमृतलाल नागर
चूंटेली कविता : विश्वनाथ प्रताप तिवारी

- *संपादित ग्रंथ :* **13**

21*वीं सदी के दो दसकों की गुजराती कहानी*
गांधी और सन् 1980 *ई. के बाद का हिंदी*
भारतीय साहित्य एवं संस्कृति : अंत संवाद
गद्य संचयन , वाणी प्रकाशन
भारतीय साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
समकालीन हिन्दी कविता, गद्य प्रभा, कथा यात्रा
छायावादोत्तर हिन्दी कविता
श्रेष्ठ निबंध, गुजरात का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखन (*डॉ. रघुवीर चौधरी के साथ*)

- *आधुनिक हिन्दी कविता*
- *पुरस्कार*

(1) *डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान* 2006
(2) *हिंदी गौरव पुरस्कार* 2018 - *हिंदी साहित्य अकादमी, गांधीनगर*
(3) *साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार* 2019 *,साहित्य अकादमी, दिल्ली*

- *बोध प्रश्न*

  - *निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए.*

    (1) *आलोक गुप्त का जन्म कहाँ हुआ था?*
    (2) *आलोक गुप्त की माता का नाम क्या था?*
    (3) *आलोक गुप्त किस विश्वविद्यालय के कुलसचिव रहे थे?*
    (4) *आलोक गुप्त के संपादित ग्रंथ कितने है?*
    (5) *आलोक गुप्त को साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार कब मिला था?*

7.5 सर्जनात्मक अनुवाद का अर्थ

सर्जनात्मक अनुवाद को समझने के लिए अनुवाद के कुछ मुख्य प्रकार की हम चर्चा करेंगे. वैसे तो अनुवाद के कई प्रकार होते हैं जिसमें मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं :-

1. शाब्दिक अनुवाद : इसमें शब्दों का सीधे-सीधे एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है. इसमें व्याकरण और वाक्य रचना का पालन किया जाता है, लेकिन कभी-कभी यह अनुवाद सही अर्थ नहीं दे पाता है.

इसमें वाक्य की संरचना और भावनात्मक अर्थ का ध्यान कम रखा जाता है और शब्दों का सीधा अनुवाद किया जाता है. उदाहरण:

– अंग्रेजी से हिंदी

अंग्रेजी वाक्य: "I have a book."
शाब्दिक अनुवाद: "मैं पास एक पुस्तक है."
सही अनुवाद: "मेरे पास एक पुस्तक है."

शाब्दिक अनुवाद में वाक्यों की संरचना और व्याकरण की त्रुटियाँ हो सकती हैं, इसलिए इसे संपूर्ण अनुवाद मानना सही नहीं होता.

2. भावानुवाद : इसमें शब्दों के बजाय भाव का अनुवाद किया जाता है. इसमें अनुवादक मूल पाठ के भाव या विचार को ध्यान में रखते हुए उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक को सही अर्थ समझ में आए. उदाहरण :-

मूल वाक्य
"उसके शब्दों में जादू है."

शाब्दिक अनुवाद:
"There is magic in his words."

भावानुवाद:
"His words have a magical charm."

3.सर्जनात्मक अनुवाद : सर्जनात्मक अनुवाद में अनुवादक केवल भावों का अनुवाद नहीं करता, बल्कि रचनात्मक रूप से नए संदर्भ, विचार या शैली को प्रस्तुत करता है. यहाँ अनुवादक को और अधिक स्वतंत्रता होती है, बस पाठ का उद्देश्य और सृजनात्मकता बनाए रखी जाए. उदाहरण :-

"Every cloud has a silver lining."

साधारण अनुवाद : "हर बादल की एक चांदी जैसी किनारी होती है."

सर्जनात्मक अनुवाद : "हर कठिनाई में आशा की एक किरण छिपी होती है."

सर्जनात्मक अनुवाद का उद्देश्य किसी पाठ या वाक्य का अर्थ और भावना बरकरार रखते हुए, उसे अधिक प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से प्रस्तुत करना होता है.

- *बोध प्रश्न*

- *निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए.*

(1) *अनुवाद को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?*
(2) *शाब्दिक अनुवाद किसे कहते हैं?*
(3) *भावानुवाद किसे कहते हैं?*
(4) *सर्जनात्मक अनुवाद का उदाहरण दीजिए.*
(5) *सर्जनात्मक अनुवाद किसे कहते हैं?*

7.6 *'कंकू' कहानी का कथानक*

'कंकू' कहानी की शुरुआत, 'न करे नारायण पर यदि मैं मर जाऊं तो तू अपना जीवन मत बिगाड़ना... किसी अच्छे आदमी का घर ढूंढ लेना...' से होती है. जो कंकू के पति खुमा की मृत्यु का सूचक है.

'कंकू' अपने बेटे हीरिया के पालन-पोषण के लिए शादी न करने का निर्णय लेती है और खुमा की जिंदगी भर का कर्ज अकेले ही चुकाती है. गाँव के कई पुरुष उससे शादी करना चाहते थे, किंतु समय बीतने और कंकू के दृढ़ निश्चय के साथ, सभी की उम्मीदें टूट गईं. इस कठिन समय में, कंकू को पास के गाँव के शेठ 'मलकचंदकाका' ने आर्थिक रूप से सहायता की. कंकू और खूमा का खाता उनके पास था और खुमा की मृत्यु के बाद, उन्होंने कंकू को हल-खेत-बेल को जोड़ने के लिए धन भी प्रदान किया. कंकू के विधवा जीवन का एक ही लक्ष्य था कि हीरिया कल बड़ा हो जायेगा और यह दुःख खुशी में बदल जाएगा.'

कहानी 'कंकू' में कंकू के अलावा एक मुख्य पात्र है 'मलकचंदशेठ' का. मलकचंदशेठ खुद चालीस साल के होने के बावजूद पैंतालीस के दिखते हैं. मलकचंदशेठ ने दो बार शादी की परंतु दोनों बार असफल रहे इसलिए वह निःसंतान रहे. वह अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहते हैं. कंकू और उसकी खुमारी के प्रति विशेष प्रेम के कारण वे उसकी मदद करने में कभी नहीं हिचकिचाते. इतना ही नहीं, जब सेठ कंकू को शादी के लिए जोड़ा खरीदते समय अपने लिए पैसे बचाते हुए देखता है, तब सेठ ने उसकी पसंद के कपड़े निकाल दिये और कंकू के लिए साड़ी तो उसके मना करने पर भी महंगी बाँध दी. लेकिन जैसे-जैसे कंकू की सुंदरता आगे बढ़ती है यह एहसास एक नया रूप ले लेता है.

'कंकू' के प्रति इस आकर्षण को मलकचंदशेठ ने बहुत छिपाया हालाँकि वह प्रयत्न करता है, किंतु कंकू की नजरें कुछ संदिग्ध जरूर होती हैं. फिर वह संदेह को दूर करते हुए मलकचंदशेठ से कहती है, "मलकचंदकाका तुम तो देवता आदमी हो, नहीं तो इतने कर्ज़ के बाद कौन औरत-जात को और कर्ज़ देता है?" मलकचंदशेठ के सुझाव

पर कंकू अपने बेटे हीरिया की शादी धूमधाम से करने की तैयारी करती है. उस तैयारी के हिस्से के रूप में, कंकू, हीरिया की शादी से एक दिन पहले, मलकचंदसेठ से पैसे लेने के लिए वहाँ गयी, दुकान पर पैसे नहीं थे, तो वे दोनों मलकचंदसेठ के घर के लिए निकल गए.

'कंकू' से बात करते समय, मलकचंदशेठ एक बिच्छू की तरह उलझन महसूस करता है और इतनी सुंदर कंकू की किस्मत को हाँफते हुए देखता रहता है. आज कंकू को भी कई सालों में पहली बार अकेलापन महसूस हो रहा है. कोठी जाकर पैसे निकालते समय दोनों अपनी भावना और संवेदना में अपने होश खो बैठते हैं. और गलत कदम उठा लेते हैं. इसके बाद कंकू अपना मुंह छिपाती गाँव तक पहुंचती है और अपने बेटे की शादी के कामों में लग जाती है. लेकिन उसके चेहरे पर खुशी की झलक नहीं दिखती.

गाँव की अनुभवी वृद्ध महिला 'गला डामोर की बहु' को कंकू के शरीर में बदलाव का पता हीरिया की शादी के चौथे-पांचवें महीने बाद चलता है. गाँव के सभी लोग इस बच्चे के पिता का नाम जानने की कोशिश करते हैं, लेकिन कंकू उसके बारे में एक शब्द नहीं बोलती.

गाँव के बुजुर्गों के आग्रह पर और बेटे की खातिर, वह 'कालू' जैसे विधुर और काले व्यक्ति से शादी कर लेती है. इतनी सुंदर और बुद्धिमान कंकू का पति बनना कालू को स्वर्ग जैसा सुखद लगता है. रातोंरात हुई इस शादी से गाँव के कई पुरुष हैरान हैं, कई तरह की टिप्पणियाँ किए जा रहे हैं.

कंकू और कालू के घर में बेटे के जन्म के बाद, गला डामोर की बहू बच्चे का सूक्ष्मनिरीक्षण करती हुई देखती है और महसूस करती है कि बच्चे का पिता मलकचंदशेठ हैं. तभी तो पन्नालाल पटेल की कहानी 'कंकू' में वृद्धा अंत में कहती हैं, नासपीटे मलका..."अरे मलका ! यह तो लाखों में एक कंकू जैसी औरत मिली; नहीं तो..."
और यहाँ कहानी समाप्त होती है.

▪ *बोध प्रश्न*

- *निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए.*

(1) *कहानी की नायिका का नाम क्या है?*
(2) *कंकू के बेटे का नाम क्या है?*
(3) *कंकू की दूसरी शादी किससे होती है?*
(4) *बच्चे के बारे में सबसे पहले किसे पता चला?*
(5) *सेठ का नाम क्या था?*

7.7 अनुवाद की सार्थकता

अनुवाद कार्य अति कठिन कार्य है. किसी कृति का सर्जन करना और किसी कृति का अनुवाद करना इन दोनों में से अधिक कठिन कार्य निश्चित रूप से कृति के अनुवाद का ही रहेगा. क्योंकि कृति के सर्जन में रचनाकार को पर्याप्त स्वतंत्रता मिलती है. रचनाकार किसी भी विषय पर लिख सकता है या अपने विचार व्यक्त कर सकता है. अपनी रचना में किसी विषय पर अधिक लिखना किसी विषय पर कम लिखना यह उसके अधिकार में होता हैं. परंतु यह अधिकार अनुवादक को नहीं मिलता.

अनुवादक चाहकर भी मूल कृति में अपने विचारों का हस्तक्षेप नहीं कर सकता. हाँ मूल कृति में उसके विचारों के अनुरूप बात की गई हो तो सर्जनात्मक अनुवाद के माध्यम से वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकता हैं. साहित्य में इसी कारण अनुवाद के कई प्रकार देखने को मिलते हैं. यदि किसी कृति के अनुवाद में शब्दानुवाद से काम नहीं चल रहा तो भावानुवाद से काम चलाना पड़ता हैं और यदि भावानुवाद से भी काम न चल सके तो सर्जनात्मक अनुवाद के माध्यम से कृति का अनुवाद किया जाता है. क्योंकि तब ही किसी भी कृति का अन्य भाषा में सार्थक अनुवाद हो पाता है.

'कंकू' कहानी का भी अनुवादक द्वारा सर्जनात्मक अनुवाद किया गया है क्योंकि मूल रचना गुजराती भाषा में लिखी गई है और अनुवाद हिन्दी भाषा में किया गया है. अब मूल पाठ के लेखक ने गुजरात के समाज और संस्कृति के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है. जब की अनुवादक उसे हिंदी भाषा में अनुदित करेगा तो वहाँ के समाज और संस्कृति का रूप भिन्न हो सकता है. इसी कारण अनुवादक को मूल पाठ के मुहावरे, कहावते आदि का अनुवाद करते समय विशेष ध्यान रखना होता है.

कुछ-कुछ शब्द या वाक्य ऐसे होते हैं जिसका ज्यों का त्यों अनुवाद नहीं हो सकता. जैसे कंकू जब मलकचंद सेठ के पास पैसे लेने जाती है तब का एक संवाद है. मलकचंद कंकू से पूछता है– કંકુ ચાર વિસોએ નહિ થાય? (कंकू, चार विसोए नहीं थाय?) यानी की चार बार बीस यानी अस्सी रूपये से नहीं चलेगा? अब ऐसे शब्द का चलन गुजराती भाषा में देखने को मिलता है जबकि हिंदी भाषा में इस प्रकार नहीं कहा जाता. इसी कारण अनुवादक ने भी सरल भाषा में ही लिखा है कि कंकू अस्सी रूपये से नहीं चलेगा?

वही आगे कहानी में फिर एकबार यही उल्लेख होता है. जिसमें છ વિસું પૂરા કરતાં પૂછ્યું :

'ગણું વધારે'

(छ विसु पूरा करता पुछ्यु : 'गणु वधारे?') छ वीसु यानी छह बार बीस यानी एक सौ रुपए. तो यहाँ भी अनुवादक ने सरलता अपनाते हुए एक सौ रुपए ही लिखा है.

इस प्रकार की परिस्थिति में अनुवादक सदा सरलता का ही मार्ग चुनता है. ताकी पाठक को समझने में आसानी रहें.

अनुवादक ने गुजराती भाषा के लोकगीत की पंक्तियों का भी हिंदी अनुवाद किया है जैसे–'જરા ધીમે પગ મેલ ધીમે '

''ज़रा धीरे से पैर रख धीरे से''

और दूसरी पंक्ति है –

'માતાના બોલ વીરે વિસારી મેલ્યા,
સાસુના બોલ વા લા લાગ્યા,
હીરાભાઈ વીરા! મે લોમાં રે જો. '

*''माता के बोल भाई भूल गये
सास के बोल मीठे लागेज
हीरा भाई, वीरा महलों में रहनाज.''*

इस प्रकार गुजराती भाषा के लोकगीत का अनुवाद हिंदी भाषा में इस प्रकार से करना भी एक अच्छे अनुवादक का गुण है.

कहानी में कुछ स्थान पर गुजराती कहावत का अनुवाद करना लेखक के लिए कठिन हो जाता है तो लेखक उसके स्थान पर अन्य प्रचलित कहावत का उपयोग करता है.

जैसे –कहानी में एक जगह पर एक बात चलती है कि

એ જ અંધારી રાતે ગામના બેચાર બુઢ્ઢા ભેગા થયા અને એકમેકના 'કાન કરડી ખાતા 'વાત કરવા લાગ્યા.

इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार से किया गया है–

उसी अँधेरी रात को गाँव के कुछ बूढ़े एकत्र हुए और कुछ 'घुसपुस करने लगे'.

तो इस प्रकार गुजराती ग्रामीण परिवेश की भाषा में लिखी गई इस कहानी का हिंदी अनुवाद अति कठिन कार्य है और इस कार्य में पूर्णतः सफलता प्राप्त करना तो संभव ही नहीं. फिर भी अनुवादक द्वारा इस कठिन कार्य को उचित न्याय दिया गया है. अनुवाद के बाद जिस प्रकार गुजराती कहानी में ठेठ ग्रामीण परिवेश का वर्णन है वहाँ तक भले ही ना पहुँच पाएँ फिर भी यह अनुदित रचना कई हद तक उसे न्याय दिलाने में सार्थक सिद्ध हुई है.

- *बोध प्रश्न*
  - *निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए.*

(1) *पन्नालाल पटेल की कहानी कंकू मूल किस भाषा में लिखी गई थी?*

(2) *'कंकू' कहानी का अनुवाद किस प्रकार का है?*

(3) *छ विसु का अर्थ कितना होता है?*

(4) *'कंकू' कहानी में किस परिवेश को दिखाया गया है?*

(5) 'જરા ધીમે પગ મેલ ધીમે' *का हिंदी अनुवाद क्या होगा?*

7.8 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी. अब आप इकाई के प्रत्येक उपशीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए, जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी. हम भी यहां यही काम करने जा रहे हैं. आप अपनी सूची से इस सूची का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- *'कंकू' कहानी के लेखक पन्नालाल पटेल संवेदनशील साहित्यकार थे.*
- *कहानीकार ने अपनी कहानी में भारतीय समाज के ठेठ ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है.*
- *'कंकू' कहानी में लेखक ने यथार्थवादी शैली का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है.*
- *प्रो. आलोक गुप्त ने सफल अनुवादक की भूमिका निभाई हैं.*
- *इस कहानी में मुख्य पात्र कंकू है. साथ ही मुख्य पुरुष पात्र के रूप में सेठ मलकचंद को देख सकते हैं.*
- *रचना का गुजराती भाषा से हिन्दी भाषा में सर्जनात्मक अनुवाद देखने को मिलता है.*
- *अनुवादक द्वारा रचना का सफल अनुवाद हुआ हैं.*
- *'गूंगे सूर बांसुरी के' कहानी संग्रह की 'कंकू' कहानी सर्जनात्मक अनुवाद का श्रेष्ठ नमूना हैं.*
- *'कंकू' कहानी की नायिका कंकू पाठक के मन में विशेष छाप छोड़ती है.*
- *कहानी की भाषा सरल, सटीक एवम् प्रवाहमय हैं.*

7.9 परीक्षापयोगी प्रश्नावली

- *बोधप्रश्न*

- *निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए*

(1) *पन्नालाल पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए.*

(2) *'कंकू' कहानी का कथानक लिखिए.*

(3) *सर्जनात्मक अनुवाद की सार्थकता के रूप में कंकू पर चर्चा कीजिए.*

- *टिप्पणी लिखिए*

(1) *'कंकू' के पात्र का चरित्र चित्रण*

(2) *अनुवादक के रूप में आलोक गुप्त*

(3) *'मलकचंदशेठ'*

(4) *सर्जनात्मक अनुवाद*

(5) *अनुवाद के प्रकार*

7.10 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *पन्नालालनी श्रेष्ठ वार्ताओ (गुजराती भाषा में)*
- *गूंगे सूर बांसुरी के*
- *जिंदगी संजीवनी (आत्मकथा – पन्नालाल पटेल)*

Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
(Established by Government of Gujarat)

"Jyotirmay" Parisar,

Dr. BAOU Marg, Sarkhej - Gandhinagar Highway, Chharodi Ahmedabad – 382481

Email: hindi@baou.edu.in | Website: www.baou.edu.in

बी. ए. (ऑनर्स)

स्किल एन्हांसमेंट कोर्स

HNDSEC-101

अनुवाद और उसकी प्राविधि

कृपया यह प्रतिपुष्टि (Feedback) फॉर्म भरकर उपर्युक्त पते पर 'हिंदी विभाग, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़' के नाम अवश्य भेज दें. आपकी अमूल्य राय आपको दी जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी. यदि आप चाहें तो अपनी पहचान गुप्त रख सकते हैं, यानी नीचे 'नाम' और 'एनरोलमेंट नंबर' देना आवश्यक नहीं है. अन्य सभी कॉलम अवश्य भरें.

नाम : ____________________________________ एनरोलमेंट नंबर : ______________

लिंग : स्त्री ☐ पुरुष ☐ ट्रांसजेंडर ☐ आयु वर्ग : 18-30 ☐ 31-40 ☐ 41-50 ☐ 50 से ऊपर ☐

नागरिकता : प्रदेश _______________________ देश ______________________________

प्रवेश वर्ष : ______________ आजीविका के लिए कार्यरत : हाँ ☐ नहीं ☐

कृपया अपनी राय नीचे दिए गए बिंदुओं के सामने सही खाने में सही (√) का निशान लगाकर दें.

{अ – अच्छा; सा – सामान्य; ख – ख़राब}

	इकाई 1			इकाई 2			इकाई 3			इकाई 4		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त												

प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो)

____

____

____

____

____

____

	इकाई 5			**इकाई 6**			**इकाई 7**		
	अ	**सा**	**ख**	**अ**	**सा**	**ख**	**अ**	**सा**	**ख**
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है									
भाषा सरल है									
विषय अच्छी तरह समझाती है									
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.									
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.									
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.									
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं									
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.									

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो)

BAOU
Education for All

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્‌ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેંકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેંકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ

DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY
(Established by Government of Gujarat)
'Jyotirmay' Parisar,
Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481
Website : www.baou.edu.in

978-93-5598-637-5